देवगिरि

21 वाँ अंक

माल एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय

टाउन सेंटर, एन-5, सिडको, औरंगाबाद - 431003 (महाराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	ई-ऑफिस : आज की जरुरत	1-2
2.	कोरोना महामारी से सीख	3-4
3.	स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग आज की जरुरत	5-6
4.	कविता क्या है?	7
5.	जल संरक्षण की आवश्यकता	7-10
6.	ऑनलाईन एज्युकेशन के फायदे एवं नुकसान	11-12
7.	मैदानी खेलों का महत्व	13-14
8.	फिर उढा चुनर धानी	15
9.	युवाओं में नशे की लत छुडाने के उपाय	15-18
10.	लोकतंत्र में चुनाव का महत्व	19-20
11.	नम्रता ही सच्ची मानवता है	21
12.	माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम	22-23
13.	धूमपानः एक सस्ता शौक या एक महँगी मौत?	24-28
14.	सचल दूरभाष यंत्र (मोबाईल)	29-30
15.	सर्वोत्तम-मन की शांति	31-33
16.	शिक्षक	34-35
17.	राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान	36-37
18.	जल संरक्षण आवश्यक है	38-39
19.	कोरोना महामारी में मानव जीवन शैली में परिवर्तन	40-41
20.	आत्मनिर्भर भारत	42-43
21.	ग्रामीण जीवन शैली बनाम शहरी जीवन शैली	44

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
22.	इंसान जाने कहां खो गये है?	45
23.	हिंदी सप्ताह का आयोजन	46-47
24.	अधीक्षक संगठन की नई कार्यकारिणी	48
25.	कार्यालयीन गतिविधियों की झलक	49-55

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं कि माल एवं सेवा कर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय औरंगाबाद अपनी राजभाषा पत्रिका "देवगिरि" के 21 वे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है|

भाषा मानव जीवन में सम्प्रेषण की एक महत्वपूर्ण ईकाई है, जिसके माध्यम से हम अपने विचार व भावों को अभिव्यक्त करते है | अपने संस्कार, सभ्यता, संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है | भाषा के द्वारा ही हम अपनी विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचा सकते है | जब भाषा मानव जीवन में इतनी महत्वपूर्ण है तो उसके साथ राज शब्द जुड़ जानेपर राजभाषा के रूप में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है, इसलिए राजभाषा ऐसी होनी चाहिये जो सरल, सुबोध, सहज हो तथा देश के सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली जाने एवं समझी जाती हो|

राजभाषा देश कि जनता और जनता द्वारा चुनी गई सरकार के बीच संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम होती है | राजभाषा हिन्दी सरकारी कामकाज कि भाषा के रूप में ही नही बल्कि जनसम्पर्क तथा राष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा के रूप में भी कार्य कर रही है|

मैं अपने संदेश द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील करता हूं वो हिन्दी को अपनाने के लिए भावनात्मक रूप से संकल्प ले और राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें|

"देवगिरि" पत्रिका के लिए मेरी मंगल शुभकामनाएं|

भीमाशंकर

एच.आर.भीमाशंकर
प्रधान मुख्य आयुक्त, नागपुर प्रक्षेत्र

प्रधान सम्पादक की कलम से

प्रिय पाठकों, सर्वप्रथम मैं अपने तथा आयुक्तालय की ओर से आप सभी को जीएसटी दिवस की शुभकामनाएँ देता हूँ | जीएसटी दिवस के अवसर पर आयुक्तालय की ई-पत्रिका "देवगिरि" को पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है | मुझे इस बात कि खुशी है कि विभागीय पत्रिका के माध्यम से आप सभी सुधी पाठकों से जुड़ने का मौका मिलता है |

भारत जैसे विविध संस्कृतियों वाले देश मे जहॉ बहुत सी भाषाएं बोली जाती है वहाँ भाषायी सम्प्रेषण के लिए हिन्दी एक सशक्त विकल्प बनकर खड़ी होती है | हिन्दी के इस महत्व को समझकर ही देश की संविधान सभा ने इसे राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया है, अतः राजभाषा का सम्मान करना एवं इसका प्रचार प्रसार करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है |

"देवगिरि" पत्रिका हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार करने की दिशा में एक प्रयास है | विभागीय पत्रिका कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान करती है हमारी पत्रिका "देवगिरि" सभी इस दिशा में सार्थक मंच साबित हुई है | पत्रिका में विविध विषय पर लेखो के साथ कविता के साथ कार्यालयीन गतिविधियों की झलक मिलती है पत्रिका को संवारने में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले साथियों को धन्यवाद |

मैं आशा करता हूं कि आप इसे सहर्ष अपनाएगे और अधिक लोकप्रिय बनाने की दिशा में आप पढ़ने के बाद अपने साथियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे |

इस पत्रिका के माध्यम से सभी पाठको से अनुरोध करता हूँ कि अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराएं |

अविनाश थेटे
आयुक्त, माल एवं सेवा कर तथा
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क औरंगाबाद.

प्रबन्ध सम्पादक की कलम से

विभागीय ई-पत्रिका "देवगिरि" का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत ख़ुशी हो रही है|

किसी भी देश एवं समाज के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है| भाषा ही राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक होती है| हिंदी भाषा हमारी संस्कृति की संवाहिका के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है|

सूचना क्रांती के इस युग में हिन्दी प्राद्योगिकी के साथ जुड़ चुकी है, तथा यूनिकोड के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है| ई-ऑफिस में भी हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन हिंदी में कार्य करने के लिए सोच में परिवर्तन तथा दृढ़ निश्चय की जरूरत है|

आयुक्तालय की पत्रिका राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने का प्रयास है| पत्रिका के रचनाकार बधाई के पात्र है| आशा करता हूं कि आगे भी उनका सहयोग मिलता रहेगा|

आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों का स्वागत है, जिससे आगामी अंक को और बेहतर बनाया जा सके|

एस.बी. देशमुख
संयुक्त आयुक्त,
औरंगाबाद आयुक्तालय

सम्पादकीय

ई-पत्रिका "देवगिरि" का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है| यह अंक प्रधान सम्पादक श्री.अविनाश थेटे, आयुक्त महोदय के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा और प्रबन्ध सम्पादक संयुक्त आयुक्त श्री सुनील देशमुख के प्रोत्साहन से तथा आप सभी के सहयोग से सम्भव हो सका है|

भाषा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है साथ ही यह देश की राष्ट्रीय अस्मिता से भी जुडी है| हिन्दी देश के संस्कार, संस्कृति, परम्परा, स्वाभिमान, वेशभूषा और आदर्शों को भी अभिव्यक्त करती है तथा उसे सहेजने का सशक्त माध्यम भी है|

आज हिन्दी वैश्विक रूप ले रही है| भारतीय संस्कृति एवं योग को जानने के लिए विश्व भर में हिन्दी के प्रति रुचि बढ रही है| अतः हमें भी अपनी भाषा को अपनाने में गर्व का अनुभव होना चाहिए|

आइए अपनी भाषा के स्वाभिमान से प्रेरित हो कर हम अपना राजकीय कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करके उसे उचित सम्मान दिलाने में अपना योगदान दें|

ई-पत्रिका "देवगिरि" का यह अंक इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है| कविता, आलेख, कार्यालय की गतिविधियों की झलक इत्यादि के माध्यम से पत्रिका को पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है| आशा है कि यह अंक अभी आप सभी को रुचिकर लगेगा|

आपके अभिमत एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी|

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल

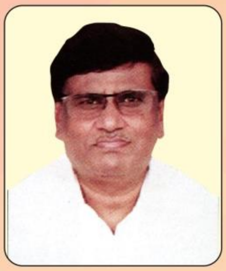

एच.आर.भीमाशंकर
प्रधान मुख्य आयुक्त,
नागपुर प्रक्षेत्र

अविनाश थेटे
आयुक्त,
औरंगाबाद आयुक्तालय

एस.बी. देशमुख
संयुक्त आयुक्त

धीरजकुमार कांबले
उप-आयुक्त

एस.ए.आरिफी
प्रशासनिक अधिकारी (मु)

राजकुमार
अधीक्षक

मंजू राठी
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बालदेव कुमार
कार्यकारी सहायक

प्रवीण त्रिपाठी
आशुलिपिक

पत्रिका में व्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
केवल विभागीय प्रयोजनार्थ ।

श्री.दीपक आर.गुप्ता
अधीक्षक

आयुक्तालय का गौरव

भारत में जीएसटी वर्ष 2017 में लागू किया गया | जीएसटी नया-नया होने के कारण उससे संबंधित नियमों, अधिनियमों की जानकारी, जीएसटी को किस प्रकार क्रियान्वित किया जाना चाहिये इन सब से सभी अपरिचित थे | चाहे वे केन्द्रीय सरकार के राजस्व अधिकारी हो या राज्य सरकार के या उद्यम, व्यापार के सदस्य हो या कर सलाहकार हो या सीए हो |

ऐसे में जीएसटी के प्रति लोगो को जागरूक करना, जीएसटी के नियमों की जानकारी देना, जीएसटी ऑनलाईन प्रणाली होने के कारण पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) तथा मायग्रेशन अन्य कई समस्यायें सामने थी | इन समस्याओं का हल करने करने के लिए उस वक्त आयुक्तालय में एक मात्र ही नाम सामने आता था वह नाम था श्री दीपक आर.गुप्ता, अधीक्षक, जीएसटी से संबंधित सभी समस्याओं को हल करने के लिए इनके पास रामबाण उपाय माना जाता है |

आयुक्तालय के जीएसटी महर्षि श्री दीपक आर.गुप्ता, अधीक्षक को उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए सीबीआईसी द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया है | इस प्रक्षेत्र से वे एकमात्र अधिकारी हो जिन्हे उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ है | श्री दीपक आर.गुप्ता, अधीक्षक इन्होने जीएसटी से संबंधित विषयों पर 1000 से अधिक कार्यशालाएं ली है | इनके पास जीएसटी से संबंधित ज्ञान का अपार भंडार है | वे समय-समय पर पत्रकार-परिषद, टॉक-शो इत्यादि में प्रमुख रूप से सहभागी होते है | वे वक्ता होने के साथ-साथ समाचार पत्रों में लेख भी लिखते है जैसे ई-वे बिल, जीएसटी रिफन्डस, जीएसटी में टीडीएस प्रोव्हीजन्स इत्यादि विषयों पर इनके लेख प्रकाशित हो चुके है |

कोविड -19 महामारी के दौरान भी इन्होने मराठवाडा ही नहीं बल्कि मुंबई नासेन एवं दिल्ली नासेन में अधिकारियों के साथ-साथ व्यापार एवं उद्यम के लिए भी ज्ञान-गंगा ऑनलाईन प्रवाहित की | लॉकडाउन के दौरान कर प्रदाता को आनेवाली सभी समस्याओं को दूर करने में उनकी सहायता करना उनसे संपर्क में रहना जीएसटी के अनुपालन हेतु उन्हें मदत करना | मार्च 2021 में कोविड-19 से पॉजीटिव होने पर भी विलगीकरण के दौरान कार्यालय एवं उद्यम से संबंधित कार्य करते रहे |

श्री दीपक गुप्ता, अधीक्षक कुशल वक्ता भी है | सीए संगठन, लेखाकर्म तथा प्रबंधक संगठन, सी.आय.आय., सी.एम.आय.ए., मासिया द्वारा आयोजित सेमिनारों में व्याख्यान देते है | वे सोशल मिडिया प्लेटफॉर्म पर भी सक्रिय है, इस पर वे जीएसटी से संबंधित चर्चा करते है तथा प्रश्नों का समाधान भी करते है | ऐसे कर्मठ, निष्ठावान, निपुण, सज़ग अधिकारी कों प्रशस्ति पत्र मिलनेपर आयुक्तालय की ओर से बधाई तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ |

प्रशस्ति पत्र

Certificate of Appreciation

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड

Central Board of Indirect Taxes & Customs

श्री दीपक रामनिवास गुप्ता, अधीक्षक

को समर्पित और सराहनीय सेवा के प्रतिपादन और जी.एस.टी. प्रशासन में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार स्वरूप यह प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

Sh. Deepak Ramniwas Gupta, Superintendent

is awarded this Certificate for rendering dedicated and meritorious service and promoting excellence in administration of GST.

दिनांक/Dated
01.07.2021

एम. अजित कुमार/M. Ajit Kumar
अध्यक्ष/Chairman

ई-ऑफिसःआज की जरुरत

कोविड महामारी को आते लगभग एक साल हो गया था । दस बजे के दौरान कार्यालय में बैठा ही था, तब मुझे सिपाही ने आवाज देकर बोला कि, सर आपको बडे साहब ने बुलाया है। में थोड़ा चकित हो गया कि, वैसे तो कोई जरुरी काम मेरे पास प्रलंबित नहीं था और जब कोई जरुरी काम रहता था तो सर मुझे या तो वाटस्‌ॲप पर मैसेज करते या कॉल करके बोलते थे । इसलिये मै थोडा अचरज में ही उनकी केबीन की तरफ चल पडा।

सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए मै, लगभग दो महिने बाद उनके केबीन में चला गया था। सर अब बस दो साल में ही सेवा निवृत्त होने वाले थे। आते ही उन्होंने बैठने को कहा कि, यह जो अपना ई - कार्यालय है, वह तो पूरी क्षमता के साथ कार्यरत है। रोज आप लोगों के लेखन क्षमता को मैं आयी हुई ई - फाइलों से परखता रहता हूँ। लेकिन मुझे दुःख इस बात का है कि, मशीनों तथा तकनिकी तरक्की के कारण हमारी बातें, मुलाकातें हो नहीं रही है और कार्यालय में जो हँसी खुशी या परिवार जैसा माहौल लुप्त होने लगा है। मैने तुरन्त उस पर सुझाव दिया कि, महिने में एक साप्ताहिक अवकाश को हम इस बारे में एक छोटी मुलाकात रख सकते है, जिससे वे खुश हो गये।

ई - कार्यालय का प्रचलन तथा संचलन करने वाले राज्यों में पंजाब का स्थान प्रथम है, जिन्होंने इसका प्रभावी अमल करके बाकी राज्यों के लिये ऑनलाईन प्रशिक्षण सामग्री भी उपलब्ध करा के रखी।

धीरे - धीरे अभी देश के सभी राज्य इसका अनुसरण करके अपने कार्यालय तथा विभागों में इसका संचलन शुरु कर रहे है। केन्द्र सरकार की कार्यालयों में गृह मन्त्रालय, वित्त मन्त्रालय इसमें अग्रेसर है।

अ) आज के इस तकनीकी दौर में, तथा पर्यावरण संरक्षण एक अहम प्रश्न विश्व के सामने उभरा है। अगर आप कार्यालय को पेपरलेस करते हैं, तो इसमें कागज की बचत होगी और हजारों पेड़, जो कागज बनाने हेतु क्षतिग्रस्त होते हैं, उन्हें बचाया जायेगा। पेड बचने से पर्यावरण में हवों के घटकों का समतोल रहेगा और ओझोन की परत को नुकसान नहीं होगा । फाईलों की इस यातायात में उनको संभालकर रखना भी एक बहुत बड़ी दिक्कत है, उसे आग, पानी, दीमक जैसी शत्रुओं से बचाना पडता है। कोविड महामारी के चलते, किसी संक्रमित व्यक्ति द्वारा अगर फाईल इस्तेमाल की जाती है तो इस बीमारी के फैलने का भी बहुत बडा खतरा होता है। पेपर्स के फाईल्स रखने हेतु

कैबिनेट, रैक, अलमारी जैसे फर्निचर की वजह से जगह की व्याप्ती बढ़ जाती है । महामारी के दौरान जो 'घर से कार्य' (वर्क फ्रॉम होम) के आदेश का अनुपालन ठीक तरह से इसलिये नहीं हो पाया, क्योंकि हम पेपर्स फाईल्स के जरिये कार्यालय चलाते थे। अब यह सब उलझनों एवं समस्याओं का एक ही समाधान है : ई - आफीस / आइये, अब जरा इनके फायदों की तरफ नजर डालें। ई - कार्यालय का सबसे महत्वपूर्ण फायदा यह है, कि यह आप 24 घन्टे कहीं भी, कैसे भी इस्तेमाल कर सकते हैं, उसके लिये, स्मार्ट फोन / पी सी / लैपटाप और एक तगडे इन्टरनेट कनेक्शन की जरुरत है। सामाजिक दृष्टि से यह इतना सुरक्षित है कि, आप इसे किसी इन्टरनेट कैफे पर भी खोल सकते है, क्यों कि इसे दो बार लाग-इन पासवर्ड तथा ओटीपी (वन टाईम पासवर्ड) जैसी अभेद्य सुरक्षा दी गई है । साईबर चोरों के लिए इस खोलना मुश्किल ही नहीं बल्की नामुमकीन है।

ई-ऑफीस के तहत जो सॉफ्टवेअर बनाया गया है, उसको इस्तेमाल के लिए आसान है, जिसे यूजर-फ्रेन्डली भी कहा जाता है। इसमें अगर फाईल खोलने वाले को यह लगता है कि, यह तत्काल/अति शीघ्र मामला है, तो वह उस फाईल को यथोचित चिन्हांकित (मार्क) करके अपने निकटतम वरिष्ठ अधिकारी को भेज सकता है। इसमें फाईलों तथा मामलों के निष्पादन हेतु समयावधि भी निश्चित करने का अधिकार एक अधिकारी को है । ई-ऑफीस के अपने कार्य-स्थल) पोर्टल में हम एक कौन्टेट लिस्ट भी बनाकर रख सकते है, जिन्हें हम बार-बार पत्राचार करते है । उन्हें अपना पत्राचार प्राप्त होने के बाद भी उन्होंने वह पढ़ लिया है या नहीं यह भी हम अपने पोर्टल से जान सकते है । ई-ऑफीस में कुछ मेल को भी संलग्न करके रखा है, जिससे हम सीधा पत्र अभ्यर्थी को भेज सकते है।

ई-ऑफीस का परिचालन अगर सुचारु रुप से हो जाए, तो बहुत से कर्मचारी अपने निवास स्थानों से काम कर सकते हैं, इससे सडक पर होनेवाली भीड को रोका जा सकता है । इस तकनिकी अद्यतन के साथ हम देश के विकास में चार चाँद लगा सकते हैं । अन्त में मैं इस दौर में यही कहूँगा कि, 'छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी, नये दौर में लिखेंगे मिलकर नई कहानी हम हिन्दुस्तानी।' जय हिंद !

-प्रशांत देशपांडे
अधीक्षक लेखापरीक्षा

कोरोना महामारी से सीख

"जीवन रुक सा गया,
भौतिकता का नशा गया,
वायरस क्या आया,
सच का आईना दिखा गया।"

उपर्युक्त कथन कोरोना - महामारी यानि कोविड - 19 के संदर्भ मे एकदम सच साबित होता है। कुछ चंद महीनो पहले विश्व जिस तीव्र रफ्तार से दौड़ रहा था, कोरोना महामारी ने उस रफ्तार के पहिये को पटडी से उतार दिया। परमाणु हथियारों के इस युग मे एक दिखाई न पड़ने वाले सूक्ष्म से विषाणु ने मनुष्य को घुटनों पे ला दिया है।

हालांकि प्राकृतिक आपदाओं पर मनुष्य का नियंत्रण नही हो सकता परंतु कुछ कारणों से इसे मनुष्यो की देन कहा जा सकता है। मनुष्यों ने जिस कदर प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करके अपने भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिये चाहे समुद्र हो या मरुस्थल, चाहे जमीनी भाग हो या हरे भरे जंगल, हर जगह, हर जगह मनुष्यों ने प्रकृति के संतुलन को खराब किया है, निश्चय ही कोरोना वायरस जैसी अनेकों बीमारियों को जन्म देने का रास्ता साफ किया है।

परन्तु मनुष्य ही ऐसी आपदाओं को अवसर में बदलने का साहस जुटा सकता है और अनेको बार ऐसा किया भी गया है तथा निश्चय ही कोरोना महामारी से भी हमें बहुत सारी सीख मिलती है। चाहे स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की तैयारी करना हो या अपने व्यक्तिगत साफ सफाई व आचरण पर ध्यान देना हो, साफ सफाई के क्षेत्र मे निश्चय ही बहुत सारे सुधार हुए हैं।

तमाम वैश्विक स्वास्थ्य संगठनों जैसें डब्यू.एच.ओ. आदि द्वारा भी बार-बार कोरोना महामारी से बचने के आदेश जारी किये जाते रहे हैं जैसे की निरंतर हाथों की सफाई रखना या हाथों को साबुन से बार-बार धोना तथा चेहरे को ढक कर रखना इत्यादि और यह आचारण केवल कोरोना महामारी से बचने के लिये ही नही बल्कि हमें अपने दैनिक जीवनयापन में भी इसको अपनाने की आवश्यकता है। दूसरा कोरोना महामारी से बचने के लिये जो सरकार द्वारा लॉकडाऊन लगाये गये ते उससे हमे अपने आप को बीमारी से बचाने में मदद तो मिली है उसके साथ-साथ हमे अपने परिवारजनों के साथ रहने का भी भरपूर समय मिला जो कि आजकल के तीव्र गति से दौड रहे विश्व में काफी कम हो गया है। हम अपने भौतिक सुख सुविधाओं की दौड़ में लगकर अपने परिवार को ही अपना किमती समय अपने

ना दे पाते जो कि एक मजबूत परिवार समाज व राष्ट्र निर्माण की मुलभूत इकाई है। बावजूद इसके की लॉकडाऊन से हमारे सप्लाई चेन पर असर पड़ा है, परंतु इससे हमें यह भी सीखने को मिलता है की हम मुलभूत चीजों के सहारे भी जीवन यापन कर सकते हैं। भौतिक सुख सुविधाओं की दौड़ से हटकर हमें अपने जीवन यापन के तरीके को भी बारिकी से गौर करने का समय मिला, जो कि हमारे व्यक्तिगत विकास के लिये बहुत जरुरी है।

इसके अलावा स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्र जैसे की हॉस्पीटल, नर्सिंग होम इत्यादि के मुलभूत ढांचे को भी मजबूत करने का पाठ मिला, जो कि राष्ट्र निर्माण के लिए अत्यंत जरुरी है। अगर किसी देश को निरंतर आगे बढ़ते रहना है तो स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्र को निश्चय ही मजबूत करना होगा।

-सुमित नरवाल
कर सहायक

स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग आज की जरुरत

किसी भी प्राणी की पहचान उसके जीवन जीने के ढंग, वेशभूषा, भाषा रहन-सहन, व्यवसायिक गतिविधियों इत्यादि से होती है। इन्हीं सब से जीवन-निर्वाह आसान बन जाता है । पारस्परिक निर्भरता से सामाजिक उत्थान तथा अन्य विकास के कार्य संपन्न किए जा सकते हैं । एक आत्मनिर्भर पहचान इन्हीं सब के आधार पर प्राप्त की जाती है । तभी तो समाज में विविधता बहुतायात रुपों में देखने को मिलती है।

इसी प्रकार एक देश की पहचान उसकी राष्ट्रभाषा, संस्कृति, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय व्यवसायिक, क्रिया-कलापों में द्वारा है । वैश्विकरण के समय में देश के उद्योग-धंधों, व्यापारिक तरिकों को बढ़ावा देना ही श्रेयस्कर होगा । जहाँ वैश्विकरण ने एक देश के लिए दुनिया के द्वार खोल दिए हैं वहीं इसी वैश्विकरण ने ''आत्मनिर्भरता'' की संकल्पना को निष्प्राण कर दिया है। प्रत्येक स्थिति में, प्रत्येक आवश्यकता में अन्यों की तरफ देखना; अत्यंत दयनीय शर्तों को इंगित करता है। अतः स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना-आज की नितांत आवश्यकता बन गई है।

भारतवर्ष के परिपेक्ष्य में ''स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग-आज की जरुरत'' निम्न कारणों सें समझी जा सकती है।

१. बढ़ती जनसंख्या - विश्व का दुसरा सबसे बडी जनसंख्या वाला देश होने के कारण स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना अति आवश्यक हो गया है। इतनी बडी जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराना, किसी दुष्कर कार्य से कम नही है। यदि देश मे ही बनी कम लागत व कम मूल्य वाली भोजन सामग्री को बढ़ावा दिया जाये तो यह समस्या काफी हद तक हल की जा सकती है। जैसे मुंबई में वडा -पाव; दक्षिण भारत मे इडली-डोसा, उत्तप्पा; उत्तर भारत मे छोले-कुल्चे इत्यादि अच्छे विकल्प हो सकते है। इनका और इसी प्रकार के अन्य भोजन सामग्रियों का प्रचुर प्रचार-प्रसार, वितरण-व्यवस्था से लाभ उठाया जा सकता है। इनसे भिन्न स्तर से नागरिकों को रोजगार के अवसर मिलेंगे और उनका जीवन - निर्वाह हो पायेगा।

इनका सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभप्रद है। बाजार में उपलब्ध अन्य विदेशी वस्तुओं (जंक फूड) के उपयोग से सरकार पर स्वास्थ्य सेवाओं मे अधिक राजस्व के खर्च की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

रोजगार :- इस समय देश के युवाओं के सामने बेरोजगारी एक बहुत बडी समस्या है। स्वदेशीकरण से स्वदेशी उद्योग - धंधों को लगाया जायेगा, उनमें कार्य करने हेतु, देश के युवाओं को ही अवसर प्रदान किया जाये। इस प्रकार उन्हे रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है । इससे अन्य जो फायदें होगे वे निम्न है।

क)युवाओं में पैर पसारती तनाव की समस्या से निजात।

ख) ब्रेन ड्रेन की संकल्पना का अंत।

ग) आत्मनिर्भरता की सोच व कार्यशैली को बढावा।

३. राजस्व संग्रह में बढोत्तरी : स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से विदेशों को जाने वाले राजस्व पर रोक लगेगी। तथापि इस राजस्व को देश के ही अन्य विकास हेतु कार्यों में प्रयोग किया जा सकेगा। आज हमारे देश के राजस्व का एक बहुत बडा भाग विदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने पर खर्च होता है।

४. निर्यात को बढावा : देश में ही बनी वस्तुओं के प्रयोग व उनके निर्यात से देश राजस्व अर्जित कर सकता है। हमारी, हमारे देश की कोशिशों से हम स्वदेशी, वस्तुओं के निर्यात को बढा सकते है और जहाँ आज राजस्व खर्च किया जाता सकता है।

६. स्थान-विशेष का विकास :- स्वदेशी वस्तुओं के मूल, स्थान-विशेष पर ही उन उद्योग-धंधों को बढावा, स्थापना करके, इस क्षेत्र विशेष का चहुँमुखी विकास संभव हो पाएगा। यदि विचार व आचार सही हो तो क्या यह नहीं हो पाएगा। अवश्य होगा। हमारे देश में इन अविकसित पिछडे क्षेत्र-विशेषों की कमी नही है।

हमारे राष्ट्रपिता श्री. मोहनदास करमचंद गाँधी ने भी बहुत पहले ही विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया था। एक अच्छा पुत्र होने के नाते देश के प्रत्येक का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग करे और देश की सरकार को चाहिए कि वह स्वदेशी रोजगारोन्मुखी उद्योग-धंधों की स्थापना, नियोजन व पालन करे।

जय हिंद!

-राजकुमार
अधीक्षक

कविता क्या हैं?

कविता है वह खिली कली-सी,
खुशबु जिसकी सभी ले पाते.

कविता है वह बंद गली सी,
जिसमें सभी नही घुस पाते

कविता है व भाव सलोना,
जिसे पढ़ चेहरे पर मुस्कान है आती,

कविता है स्पंदन दिल का,
जो लिख देती मन की पाती,

तेरा-मेरा जीवन कविता,
कविता है अनमोल कहानी

कविता ही तो इस दुनिया मे,
कवियों की है अमिट निशानी

कविता है इतिहास देश का,
वीर शहीदों की है गाथा,

कविता है विश्वास ईश का,
कविता ही है भारत-माता।

कविता है सपनों की लडियाँ,
जीवन की होनी-अनहोती,

दिल के अरमानों में व्यापी,
सूरत एक लावण्य सलोनी

नन्हों का हर खेल कविता,
कविता निर्धन की है लाचारी

जवां दिला का मेल कविता
कविता युवको की बेकारी

सागर की हर लहर कविता
कविता सागर की गहराई

सागर का तूफान कविता
कविता सागर की तन्हाई

-कु.निशा भिडे
सुपुत्री नम्रता नरेंद्र भिडे

जल संरक्षण की आवश्यकता

संसार के प्रत्येक प्राणी का जीवन आधार जल ही है। शायद ही कोई ऐसा प्राणी हो, जिसे जल की आवश्यकता ना हो। जल हमें समुद्र, नदियों, झीलों, वर्षा एवं भूजल से प्राप्त होता है। जल को जीवन कहा जाता है। अतः, इसके मूल्य को समझकर हमें उसकी बचत के बारे में भी सोचना चाहिए। यदि हम अपनी आदतों में जरा सा बदलाव कर लें तो पानी की बर्बादी को रोका जा सकता है। बस आवश्यकता है, दृढ़ संकल्प करने की तथा उस पर गंभीरता से अमल करने की, क्योंकि जल है तो हमारा भविष्य है।

जल संरक्षण का अर्थ- 21वीं सदी के पहले दशक में पूरे विश्व में दृष्टि डाले तो सत्य उभरता है कि इस दशक में पूरी मानवता कई प्राकृतिक विपदाओं से जूझ रही है। कभी बाढ़, कभी भूकंप, कभी समुद्री तूफान तो कभी जल संकट से पूरी मानवता त्रस्त है। बढ़ती आबादी के सामने सबसे बड़े संकट के रुप में जल संकट उभर रहा है। पर्यावरण से खिलवाड़ का नतीजा यह है कि आज पर्याप्त स्वच्छ जल के संकट से पूरा विश्व गुजर रहा है। दुनियाभर के विशेषज्ञों का मानना है कि वर्षा जल का संरक्षण करके ही गिरते भूजल स्तर को रोका जा सकता है। टिकाऊ विकास का यही आधार हो सकता है। भूजल पानी का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है और पृथ्वी पर होने वाली जलापूर्ति भूजल पर ही निर्भर करती है।

जल संग्रहण- सामाजिक पहल की अनिवार्यता- जल संकट देश की नहीं बल्कि समूचे विश्व की समस्या है। जल संग्रहण के लिऐ नागरिकों को जागरुक करने की अति आवश्यकता है क्योंकि जिस हिसाब से आज के समय में हम जल का दोहन कर रहे है, उसका उल्लेख करना भी संभव नहीं है। इसके परिणामस्वरूप अनियमित वातावरण की स्थिति पैदा हो चुकी है। उतर प्रदेश के बुंदेलखण्ड, अवध तथा ब्रज क्षेत्र के आगरा, इसी का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । ये घटनाएँ संकेत देती हैं कि भविष्य में स्थिति कितनी भयावह और विकराल हो सकती है। जल का संरक्षण

तथा समुचित भंडारण हो ताकि पानी जमीन के अन्दर प्रवेश कर सके।

आजादी के समय प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 5000 क्यूबिक की थी जबकि उस समय देश की जनसंख्या 40 करोड़ थी। पानी की उपलब्धता धीरे-धीरे कम होती गई तथा जनसंख्या बढ़ती गई। अनुमान यह है कि 2025 तक यह घटकर 1500 क्यूबिक की रह जाएगी तथा देश की जनसंख्या 1.39 अरब हो जाएगी। योजना आयोग के अनुसार देश का 29 प्रतिशत क्षेत्र पानी की भीषण समस्या से जूझ रहा है।

जल संग्रहण- सामूहिक पहल की आवश्यकता- राष्ट्रीय विकास की महत्ता को देखते हुए जल संरक्षण को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हुए आसान उपायों को करते हुए जन जागरण अभियान चलाकर लोगों को जागरुक करके जल संरक्षण सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस संकट के निवारण हेतु हमें तीन स्तरों पर विचार करना होगा- पहला यह कि अब तक हम जल का उपयोग किस तरह करते थे? दूसरा भविष्य में कैसे करना होगा? तीसरा कि जल संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए जाने की आवश्यकता है? पूरी स्थिति पर नजर डाले तो यह स्थिति सामने आती है कि अभी तक हम जल का उपयोग अनुशासित ढंग से नहीं कर रहे थे तथा जरूरत से ज्यादा जल का नुकसान करते थे।

जल संरक्षण कीजिए , जल जीवन का सार,
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने एक मुकदमे में फैसला देते हुए कहा कि तालाब, पोखर, झीलों, पर्वत आदि सभी जलस्त्रोत पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखते हैं, इसलिए पारिस्थितिकी संकटों से उबरने तथा स्वस्थ पर्यावरण के लिए इन प्राकृतिक देनों की सुरक्षा करना आवश्यक है। इतना ही नहीं अदालत ने राज्य सरकारों को प्रत्येक गाँव में एक विशेष जाँच दल नियुक्त करने का भी आदेश दिया। हाईकोर्ट ने जलस्त्रोतों से अतिक्रमण हटाने का भी आदेश दिया है।

जल संरक्षण के उपायः-

1.हर नागरिक को जल संरक्षण के प्रति जागरुक किया जाना चाहिए।

2.उत्तराखण्ड जल संसाधन के अनुसार टॉयलेट के फ्लश की टंकी में प्लास्टिक की बोतल रख देने से हर बार में एक लीटर पानी बचाया जा सकता है।

4. वर्षा के जल का संरक्षण किया जाना चाहिए।

5. जल संरक्षण के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों को कानून बनाना चाहिए।

6. वृक्षारोपण के प्रति लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए।

7. हर नागरिक को नहाते समय, शावर की जगह बाल्टी की प्रयोग करना चाहिए।

8. गंगा तथा यमुना जैसी सदानीरा नदियों की नियमित सफाई करनी चाहिए तथा इन्हें प्रदूषण मुक्त करना चाहिए।

9. जल संरक्षण के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग तकनिक का सहाना लेना चाहिए। केरल के कासरागोड़ जिला पंचायत के सरकारी भवन इसका अदभूत उदाहरण हैं।

10. विज्ञान की मदद से समुद्र के खारे जल को पीने योग्य बनाया जा सकता है। गुजरात के द्वारिका में प्रत्येक घर में पेयजल के साथ-साथ घरेलू कार्यों के लिए खारे जल का प्रयोग करके शुद्ध जल को संरक्षित किया जा रहा है, इसे बढ़ाया जाना चाहिए। निष्कर्षतः, जल संरक्षण समूचे विश्व की मुख्य चिंता है। प्रकति हमें वायु, प्रकाश, जल आदि शाश्वत गति से दे रही है, लेकिन हम विकास की आँधी में बराबर प्रकृति का नैसर्गिक संतुलन बिगाड़ते जा रहे है। जल संरक्षण हेतु चेत जाने की जरूरत है, क्योंकि

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरे, मोती, मानूस, चून।

-प्रवीण त्रिपाठी
अशुलिपिक

ऑनलाईन एज्युकेशन के फायदे एवं नुकसान

ऑनलॉईन एज्युकेशन शिक्षा का एक अत्याधुनिक माध्यम है जहाँ शिक्षकों और छात्रों के बीच उपकरणों जैसे लैपटोप, टैब, मोबाइल फोन इत्यादि के माध्यम से शिक्षा को एक नई दिशा दी जा रही है। अध्ययन की इस पद्धति को आजकल कोरोना महामारी के दौरान ज्यादा प्रयोग में लाया जा रहा है। कोरोनो को देखते हुए लगभग सभी स्कुल, कॉलेजों में इस पद्धति को बडी उत्सुकता से अपनाया जा रहा है। और इस पद्धति को सफल बनाने में शिक्षकों तथा छात्रों का योगदान सराहनीय है। यह प्रक्रिया के अपने ही फायदे है यह पद्धति काफी सुविधाजनक और अध्ययन की सबसे नयी प्रक्रिया है।

ऑनलाईन एजुकेशन के लाभ :

ऑनलाईन क्लासेस के दौरान समय की काफी बचत हो जाती है, क्योंकि इससे बच्चों तथा छात्रों का स्कूल जाने हेतु ट्रैवलिंग टाइम कम हो जाता है। इस बचे हुए टाईम को प्रयोग अपनी अन्य रुचियों में व्यतीत कर सकते है।

ऑनलाईन एजुकेशन काफी सुविधाजनक है, इस माध्यम से आप घर बैठे या कही बैठकर पढ सकते है। तथा ऑनलाईन एजुकेशन द्वारा अपने पसंद हेतु पढाई कर सकते है।

ऑनलाईन एजुकेशन से पैसो की, बचत होती है, क्योकि स्कूल में जाने से अन्य खर्चों का बोझ बढता है। वो ऑनलाईन एजुकेशन आने के बाद काफी कम हो गया है।

ऑनलाईन एजुकेशन हेतु कागजों का उपयोग काफी न्यूनतम है, जोकि हमारें पर्यावरण के लिए काफी उचित कदम है,

ऑनलाइन क्लासेज में क्लासरुम के वातावरण कि तुलना में ऑनलाइन क्लासेस में छात्र व शिक्षक के बीच तालमेल अधिक अच्छा देखा गया है। जो कि एक अच्छा कदम है।

हानि :ऑनलाइन एज्युकेशन के दौरान हमें स्कुल, कॉलेज का परिवेश नही मिल पाता, जहाँ सभी छात्र एक दुसरे सम्पर्क मे रहते हैं तथा जिसके कारण उनके व्यक्तित्व में काफी बदलाव आता है जो कि उनके व्यक्तित्व को निखारता है।

ऑनलाइन एज्युकेशन के दौरान बच्चो का ध्यान रखना चाहिए कि वे इसका गलत इस्तेमाल तो नही कर रहे हैं, क्योकि बच्चे मोबाईल, तथा टैब या अन्य उपकरण में गेम तथा अन्य बेजरुरत चीजो का उपयोग करने लगते हैं। अतः माता-पिता को तथा शिक्षको को इस सम्बन्ध में बच्चो कों नैतिक ज्ञान देना चाहिये।

ऑनलाइन एज्युकेशन के दौरान, बच्चो की बीमारियों का खतरा रहता है, क्योकि इन उपकरणो से रेडियोएक्टिव किरण, तथा

उपकरणो को काफी नजदीक से देखने पर दृष्टि विकार, सिरदर्द, तथा अन्य गंभीर समस्या भी हो सकती है।

माना जाता है कि ऑनलाइन एज्युकेशन शिक्षा की एक सस्ती पध्दति है किन्तु भारत के परिप्रेक्ष्य में यह कहना कठिन है क्योकि यहाँ पर ऑनलाइन शिक्षा के लिये पर्याप्त प्रबंध अभी स्थापित नहीं हो रहा है, किन्तु भारत सरकार द्वारा चलाये गये अभियानों/पॉलिसी ऑनलाइन एज्युकेशन शिक्षा का ऐसा माध्यम हो जायेगा जो सबसे सुविधाजनक तथा सस्ता माध्यम होगा। तथा इस शिक्षा पध्दति के माध्यम से हम इस देश का विकास और सुधार के लिये अधिक प्रयास कर सकते है।

-आकाश त्यागी
कर सहायक

मैंदानी खेलों का महत्व

खेलो के महत्व का अंदाजा इन प्रसिद्ध पंक्तियों से लगाया जा सकता है
पढ़ोगे-लिखोगे होंगे खराब
खेलोगे-कुदोगे बनोगे नवाब।

प्राचीन काल से मैदानी खेल मानव सभ्यता का हिस्सा रहे हैं। समूह में खेले जाने वाले मैदानी खेलों का प्रारम्भ मनोरंजन आदि उद्देश्यों से ऊपर उठकर वर्तमान के प्रतिस्पर्धी तथा मेडल की होड तक भले ही पहुँच चुकी हो लेकिन मैदानी खेलो का महत्व किसी भी युग में और किसी भी स्तर पर मानव जाति का सर्वांगीण विकास ही रहा है।

मैदानी खेल खिलाडियों में टीम-भावना तथा सहयोग भावना का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है। गली-मुहल्ले में होने वाले मैदानी खेल हो या ओलोम्पिक जैसी वैश्विक स्पर्धा टीम भक्त तथा सहयोग के बिना असम्भव है। खेलो में जिस टीम के खिलाडियों में सहयोग तथा तारम्य होता है वही टीम विजयी होती है। मैदान पर खिलाडियों का एक दूसरे पर विश्वास दिखाता तथा विश्वास योग्य स्वयं बनाना उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाता है। ऐसा देखा जाता है कि बेहतरीन खिलाड़ी बेहतरीन इंसान भी होते है जिनमें दूसरों को सहयोग की भावना अत्याधिक होती है। उनका स्वभाव मृदु होता है। ऐसा, मैदान पर दिखाने में उनके स्वभाव के अनुरुप ही होता है।

खेलो का सम्बंध शारीरिक सैष्ठव से होता है। खेलो के माध्यम से खिलाडी अपने स्वास्थ्य को उत्तम रखते है। खेलो की गुणवत्ता तथा परिणाम खिलाडियों के स्वास्थ्य सें सीधे प्रभावित होती है। जिन लड़कियों या लड़को में मैदानी खेलों के प्रति रुचि होती है, उनका स्वास्थ्य अन्यों से बेहतर होता है। मैदानी खेलो से शरीर की भरपूर कसरत होती है। पसीना निकलता है जिससे मांस-पेशियों मजबूत होती है एवं भूख खुलकर लगती है और व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार आता है।

खेलो का वर्तमान परिप्रेक्ष्य तो अत्यंत व्यापक होता जा रहा है। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले खेलों में कई खिलाडियों का जीवन ही बदल कर रख दिया है। अनगिनत खिलाडियों ने मैदानी खेलों में अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करके न केवल मेडल तथा पुरस्कार प्राप्त किया अपितु देश-

विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई है। अत्यंत गरीब घरों से तथा छोटे गांवों कस्बों से आये ये प्रतिभावान खिलाडी अपने खेलों के दम पर आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है और सम्मान तथा शोहरत के साथ जीवन जी रहे है। इन खेलों के दम पर आज इन खिलाडियों की सरकारी या अन्य सेवाओं में नियमित सेवा पर भी रखा जा रहा है। इन खिलाडियों के प्रदर्शन से देश का मान बढता है।

मैदानी खेलों ने विभिन्न भाषा-भाषी तथा क्षेत्रों एवं देशो को नजदीक आने का अवसर उपलब्ध कराया है। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय खेल हो या अन्य अर्न्तराष्ट्रीय खेल इनके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के खिलाड़ी आपस में अपने अनुभव साझा करते हैं और राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को मजबूत करते हैं। खेलों के प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग की भावना को भी सुदृढ किया है।

खेलों ने महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में महिला खिलाडियों ने पुरुषो के बराबर या उनसे बेहतर प्रदर्शन किया है। बॅडमिण्टन में साइना नेहवाल, पी. बी. सिंधु, टेनिस में सानिया मिर्झा, स्क्वैश में दीपिका पल्लीकल, टेबल-टेनिस में मौमादास, एथलेटिक्स में हिमा दास, तीरंदाजी में दीपिका कुमारी, बॉक्सिंग मे मेरी कौम, भारोत्तोलन में सरिता देवी आदि खिलाडियों ने अपनी चमक बिखेरी है। इनके प्रदर्शन ने सभी को चमत्कृत कर दिया है। कुल मिलाकर वर्तमान युग खेलों का है। जिस देश के खिलाडी अधिक मेडल जीतते हैं उसकी अन्तर्राष्ट्रीय साख उतनी ही मजबूत होती है। मैदानी खेलों का महत्व इसी उक्ति में है कि खेल ही जीवन है।

-मनोजकुमार सिंह
अधीक्षक

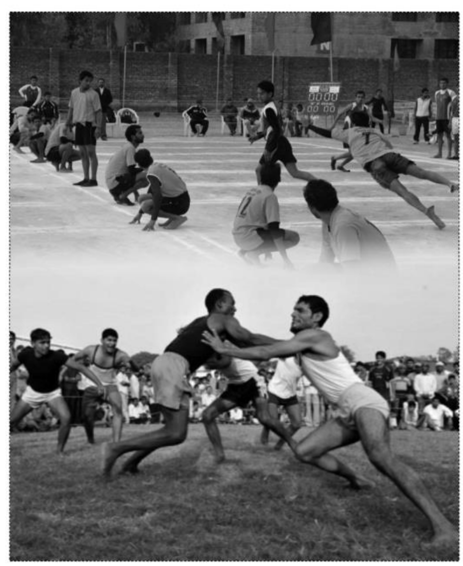

फिर उढा चुनर धानी

कण कण जिसका हम पर अर्पण
सदियों से पाला ना बनी कृपण

लानत हमपर हमने अब तक
क्या सुना कभी उसका रूदन

सूखी छाती से लहू चूस
कल की भी ना रहे सोच

मां बिलख रही सिसके है गगन
तू अपनी रौ में मस्त मगन।

नोची चूनर मां आज नग्न
रे मदान्ध ज्वाला उसकी
कर देगी भस्म

मांकी ममता की छांव तले
रौंदे उसके ही घाव हरे

हर हंसी पे तेरी आह भरे
नित देता उसको दर्द नए

कल कल करती नदियों का गीत
किस्सों में रह गया शेष

अब नालों में तब्दील हुई
गिर शिखरों के कट गए शीश

आहत माँ की सुन ले पुकार
थोडी ले सुध कर थोडा प्यार

जो जीवन है बचाना पृथ्वी पर
कर थोडा उसपर तू उपकार

फिर उड़ा चुनर धानी उसको
कलकल नदियों का दे उपहार

-अभिषेक प्रतापसिंह
अधीक्षक

युवाओं में नशे की लत छुडाने के उपाय

आज के समाज में युवाओं का बहुत महत्व है। युवाओं के बिना किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है । युवाओं का समाज के हर क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे देश में युवाओं की संख्या बहुत अधिक है अतः युवा ही किसी समाज को श्रेष्ठ तथा उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। युवाओं को प्रेरित करने के लिए सरकार कई तरह के कदम उठाती है ताकि वह आगे आकर समाज तथा देश की उन्नति में अधिक से अधिक योगदान दे ताकि देश तेज प्रगति से उन्नति कर सकें । युवाओं का पूरा ध्यान अपने करिअर को बनाने में होना चाहिए क्योंकि यदि वे पढेंगे तो समाज आगे बढेगा, समाज आगे बढेगा तो देश आगे बढेगा । अतः इसके लिए उनका ध्यान सिर्फ अपनी पढाई करिअर तथा रोजगार पर होना चाहिए । परन्तु आज के युवाओं में यह देखा जाता है कि वह नशे की ओर जल्दी आकर्षिक हो जाते है ? जिससे उनका भविष्य अधर में लटक जाता है, वह समाज में पिछड जाते है और नशा उन्हें इस हद तक बेकार बना देता है कि अपने विवेक तक की क्षमता को खो बैठते है । उन्हें यह बिल्कुल भी समझ नहीं आता है कि क्या सही है या क्या गलत है? उनकी विवेक की क्षमता बिल्कुल कार्य करना बंद कर देती है। एक बार यदि किसी युवा को नशे की लत लग जाए तो उसके लिए नशे से बचना बहुत ही कठिन हो जाता है । समाज में हर वर्ग के लोग नशे की लत के कारण कमजोर हो जाता है क्योंकि नशा करने वाले को तो नशा चाहिए फिर चाहें उसे उसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पडे । युवा जो नशे में फंस जाते है, वह इससे बाहर नही निकल पाते जिसका नतीजा यह होता है कि नशे के आदि बनकर रह जाते है । साथ ही आर्थिक रुप से उनका परिवार भी कठिन परिस्थितियों का सामना करता है । कई युवाओं को तो अपनी जान देकर भी इसका खामयाजा भुगतना पडता है। इतने गंभीर परिणाम होने के बावजूद भी नशे की लत जिनको लग जाती है, वह इसे छोडना नहीं चाहते है।

युवाओं को नशे की लत के खिलाफ जागरुक करने की आवश्यकता है । युवाओं को यह समझना चाहिए के नशे की लत में पडने के कारण वह और उनका परिवार

बर्बाद हो जाता है । उनके माता-पिता की उनसे बहुत उम्मीदे होती है कि वह पढ लिख कर एक अच्छा इंसान बनेगा उनका और देश का नाम रौशन करेगा। देश को नई ऊँचाईयों परलेकर जाएगा । युवा किसी भी देश किसी भी समाज की भविष्य है वह एक मूल्यवान सम्पत्ति (असेट) की तरह है तो देश और समाज की किसी भी तरह से कमजोर नहीं होने देती है । नशा की चाहे आप किसी भी तरीके से ले जैसे बीडी, सिगारेट, शराब, अफीम आदि यह पुरी तरह से युवाओं की जिन्दगी को बर्बाद कर देता है । नशा एक ऐसा रोग है जिससे पीछा छुडाना बहुत ही मुश्किल है । इसलिए युवाओं की और सारे समाज को यह कोशिश करनी चाहिए कि वह इसकी गिरफ्त न आएं।

युवाओं में नशें की लत छुडवाना बहुत आवश्यक है । अतः इसके लिए सरकार ने कई कदम भी उठाए हैं। सरकार द्वारा समय-समय पर नशे के खिलाफ जागरुगता अभियान चलाया जाता है ताकि लोग जागरुक ही और इसकी गिरफ्त में आने से बचें। सरकार द्वारा कई जगहों पर नशा मुक्ति केन्द्र भी खोल गए। जहाँ पर युवाओं को नशे की लात से छुडाने के लिए उनका उपचार किया जाता है। नशे की लत छुडवाया जा सकता है।

सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने युवाओं को नशे की लत से मुक्त कराएं तथा एक सुरक्षित तथा समृद्ध समाज बनाए । परन्तु यह तभी संभव है यदि वे अपने नशे की लत की छुपाएं न और नशा मुक्ति केंद्र में आकर अपना उपचार करवाएँ। युवाओं को तो हमारा समाज इस क्षति की आवश्यक है। यदि उनको नशे से नही बचाएंगे तो हमारा समाज इस क्षति की भरपाई नही कर पाएगा। ऐसानही है की कोई भी नशा में होने वाले नुकसान से अवगत नहीं है, परन्तु अनजाने में या किसी कारण वश वह इसमें फँस जाते है और अपना जीवन बरबाद कर लेते है । आज आवश्यकता है अपने युवाओं,अपने समाज और अपने देश को बचाने की। यह समय की मांग है यदि हमने इसे अनसुना कर दिया तो हमें इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड सकते है। नशे की कारण होने वाले नुकसान की हम किसी भी तरह से भरपाई नहीं कर पाऐंगे । एक स्वस्थ, सुदृढ और समृद्ध समाज के लिए युवाओं का जागरुक होना बहुत आवश्यक है । सरकार को चाहिए की वह स्कूलों, कॉलेजों में भी नशे की लत के खिलाफ अभियान चलाएं क्योंकि युवा अवस्था में बच्चो को सही जानकारी न होने के कारण नशे के चंगुल में फंस जाते हैं जिसका खामियाजा उनको तथा उनके माता-पिता को भुगतना

पडता है और वह इसके कारण होने वाले नुकसान की किसी भी तरीके से भरपाई नही कर सकते है। नशे ने हमारे समाज पूरी तरह से खोखला कर दिया है। आज युवा नशे के चंगुल में फंसता ही चला जा रहा है। नशा इस हद तक आदमी को लाचार बना देता है कि वह अपने विवेक को भी खो देता है। नशा करने के लिए आदमी किसी भी हद तक चला जाता है, इसके लिए वह गलत रास्ते पर जाने से भी पीछे नहीं हटता है। नशा समाज के लिए बहुत ही हानिकारक है। अतः यह सहकार के साथ-साथ हमारा भी कर्तव्य है कि हम भी नशे के लिखाफ जागरुक होकर इसके खिलाफ जागरुक होकर लडे और अपने युवाओं, अपने समाज और अपने देश को इस गंभीर रोग से बचाएं। माता-पिता का भी यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को नशे के खिलाफ जागरुक करें। वह अपने बच्चो से इसके बारे में बात करने में संकोच न करे क्योकि बच्चों पर संगत का बहुत ही गहरा प्रभाव पडता है। छोटी उम्र में बच्चों को भी इतनी समझ नहीं होती है कि क्या सही है क्या गलत है। उन्हे जो भी ठीक लगता है वह करते है बिना यह समझे की उसका परिणाम अच्छा होगा या बुरा। साथ ही उनमें यह समझ विकसित करने की आवश्यकता है कि वह नशे की खिलाफ जंग लडे न कि उसे अपनाकर अपना जीवन बर्बाद कर लें। समाज को इन युवाओंकी बहुत आवश्यकता है वे समाज तथा देश के लिए मूल्यवान सम्पत्ति है, जिन्हें कोई भी खोना नही चाहता है बल्कि अपने साथ मिलकर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करना चाहते है। राष्ट्र तभी समृद्ध होगा जब उसमें युवा अपना योगदान अधिक से अधिक देंगे। नशे को अपने समाज से पूरी तरह से मिटाना है और युवाओं का जीवन खुशहाल बनाना है। युवा और समाज एक-दूसरे के पूरक है। समाज पुरी तरह से युवाओं पर निर्भर है। अतः युवाओं को इसके खिलाफ जागरुक करने की आवश्यकता है।

-विशान्त कुमार
आशुलिपिक

लोकतंत्र में चुनाव का महत्व

'लोकतंत्र'' अर्थात लोगों का समूह, लोगो का तंत्र, जहाँ आम जनता ही सबकुछ होती है और वही तय करती है कि देश पर शासन कौन करेगा और प्रतिनिधित्व कौन करेगा। देश की आम जनता को लोकतंत्र ने सबके बडा हथियार दिया है जिसका नाम है ''मतदान'' - जी हाँ किसी भी लोकतंत्र के लिए मतदान सबसे महत्वपूर्ण होता है। मतदान अर्थात देश की आम जनता द्वारा अपने मतों का दान करना। मतदान ही तय करता है कि हम अपने देश की बागडोर किसके हाथों में दे रहे है। मतदान ही हमारे देश का भविष्य तय करती है। इसके द्वारा ही हम अपने देश को सुरक्षित हाथो में सौंप सकते है और असुरक्षित हाथों से बचा भी सकते हैं।

''चुनाव'' दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र भारत का आधार बनाते है। आजादी के बाद अब तक चुनाव के माध्यम से अधिकतम 17 लोकसभाओं का गठन किया जा चुका है। पहली लोकसभा का गठन 1951-52 में किया गया था। चुनाव की कार्यप्रणाली का आयोजन सार्वभौमिक व्यष्क मताधिकार द्वारा कियाजाता है। जिसकी न्यूनतम उम्र 18 वर्ष है पहले यह 21 वर्ष था, जिसे 61 वे संविधान संशोधन (1989) द्वारा घटाकर 18 वर्ष किया गया।

भारत तथा भारत को समान किसी भी लोकतंत्र के लिए चुनावों का महत्व निम्नलिखित हैं -

१) नेतृत्व का चयन :

चुनाव भारतीय नागरिकों को अपने पसंदीदा नेताओं के चयन करने का तरीका प्रदान करती है। वे ये कार्य उस उम्मीदवार को समर्थन में अपने मतों का प्रयोग करके करते हैं। जिनके विचार उनको उत्तम लगता है। उसे वह अपना मत देकर अपने देश की बागडोर उनके हाथों में सौंपते हैं।

२) नेतृत्व का परिवर्तन :-

भारत में चुनाव जनता के लिए एक सतारुढ पार्टी के खिलाफ नाराजगी व्यक्त करने का एक मंच भी है। अन्य पार्टियों को अपना मत देकर एक नये एवं अलग सरकार का गठन करने में भी सहायक होता है ये चुनाव। चुनाव में अपने मतो का प्रयोग करके एक सुयोग्य उम्मीदवार चुनना, जनता के भौतिक अधिकारों को प्रदर्शित करता है।

३)राजनितीक भागीदारी :-

चुनाव सार्वजनिक रुप से उठाए जाने वाले मुद्दो के लिए दरवाजा खोलतहे है। यदि कोई भी भारतीय नागरिक कुछ सुधार करना

चाहता है जो किसी अन्य पार्टी का एजेंडा नहीं है तो वह स्वतंत्र रुप से या एक नई राजनीतिक पार्टी बनाकर चुनाव लड सकता है और एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। तथा इस माध्यम से वह देश की युवाओं को प्रेरित कर सकता है जिसे और भी लोग इस राष्ट्र के निर्माण में अपना सहयोग कर सके।

4) स्व-सुधारात्मक प्रणाली :-

चूँकी चुनाव नियमित रुप से होने वाले प्रक्रिया है। जो हर पाँच साल में एक बार आयोजित होती है। जिसमें सत्तारुढ पार्टियों की जाँच की जाती है। और जनता की मांगो पर विचार किया जाता है यह एक स्व-सुधारात्मक प्रणाली के रुप में कार्य करता है जिसके माध्यम से सभी राजनैतिक दल अपने कार्यों की समीक्षा करते है और पिछले वर्षों या कार्यकाल के दौरान किए गए को तथा उसमें कुछ और सुधार की आवश्यकता हो तो उसे भी करते है जिसके जनता खुश हो सके और चुनाव में अपने मतदान का प्रयोग उस उम्मीदवार के पक्ष में कर सके।

लोकतंत्र में मतदाता ही सर्वोपरि है अत: मतदान करने वाला अपना मत न दे तो वह कहीं न करहीं अपने देश के पक्ष में अहित ही कर रहा है। लोकतंत्र से चलने वाले किसी भी देश के लिए चुनाव एवं चुनाव में मतदान अति महत्वपूर्ण होता है।

अतः उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते है कि लोकतंत्र में चुनाव काबहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। जिसके माध्यम से हम एक विकसित, समृद्धशील एवं महान राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। क्योंकि जब हमारा देश एक अच्छे एवं सुयोग्य इंसान के हाथ में होगा ने हमारे देश का विकास विरचित है।

''चुनाव में मत का करें संकल्प।
क्योंकि विकसित राष्ट्र का यही है विकल्प॥

-प्रत्युष कुमार
कर सहायक

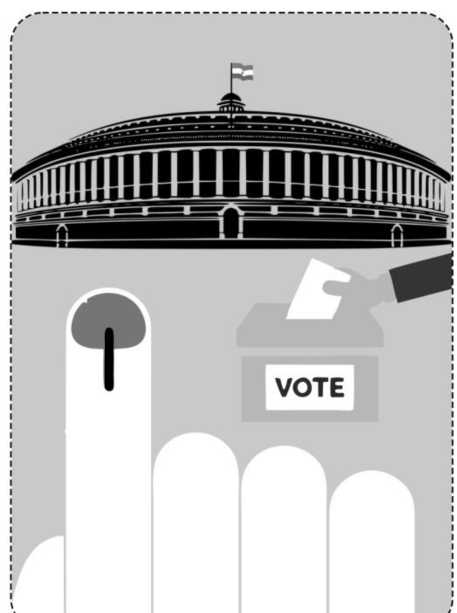

नम्रता ही सच्ची मानवता हैं ।

मानव नाम के प्राणी में जब से सभ्यता अपनाई है तब से सभ्य होने के कुछ, महत्वपूर्ण गुणों को अंगीकार करना उनका कर्तव्य बन गया है । एक अच्छा इंसान बनने के लिए जो जरुरी गुण किसी आदमी में होने चाहिए उनमें नम्रता का स्थान सर्वप्रथम है । किसी भी व्यक्ति का नम्र होना सामाजिक जीवन जीवने के लिए परम आवश्यक है । नम्रता के बिना व्यक्ति कभी-कभी पाश्विक हरकत भी कर बैठता है जो कि उसके खुद के लिए एवं समाज के लिए अशोभनीय होता है। नम्रता का महत्व बताते हुए संस्कृत भाषा में एक श्लोक भी लिखा गया है। श्लोक के शब्द कुछ इस प्रकार है ।

जीताः सभा वस्त्रवटाः
मिष्टासाम गोमताः जीता
अधवाजी तो यानवतः
सर्वम् शीतवतः नीतमः ।

अर्थात जिनके पास सुन्दर वस्त्र हैं वह सभा को जीत लेते हैं, जिनके घर में गाय है उनके घर में दूध से बनी मिठाई की कोई कमीं नहीं रहती है। (दूसरों शब्दो में वे मिठाई को जीत लेते हैं) और जिनके घर में गाडी है वे दूरी को जीत लेते है और जिनके अन्दर शीलता या नम्रता है वे सबकुछ जीत लेते है ।

अतः यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि, मानव को नम्र एवं मृदुभाषी होना चाहिए और आपस में प्रेम बाँटना चाहिए जो कि एक सच्चा इंसान होने की निशानी है । विपरित परिस्थिति में भी अपने आप को संतुलित रखना भी एक इंसानी फर्ज है । हमें ऐसे प्रयास करने चाहिए कि लोग प्रकृति और उसकी रचनाओं के प्रति नम्र भाव रखें । विनम्र होना ही सच्चे इंसान होने का द्यौतक है ।

-कुमार गौरव
निरीक्षक

माँ तुझे नमन हैं प्रतिपल प्रणाम

अनगिन दिन राते प्यार की बरसात

जीवन की हर दुविधा तुम ही से हम बांट

इक दिन ही क्यो करना मां तेरे नाम
तेरे चरणों में हैं चारो धाम

माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम

दुनिया जब लूटे भावों को तौले
गिरते जब आँधे जुबां पे बस तेरा नाम

गोद में सर रख मन हो जाए शान्त
माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम

तू ही वो शक्ति है रखती बचाकर
निष्ठुर दुनिया के मिले जोआघात

मतकर प्रतिघात है पल पल बताती
मालिक की शक्ति में रख तू विश्वास

जीवन को दिए नित नए आयाम
माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम

धरती सी सहने की शक्ति असीमित
लेकर के दी हमको वो भी है माँ

लूटा है नोचा है पल पल निचोड़ा है
पर उफ भी ना की उसने रिश्तों को सींचा है

चलूं तेरी डगर लेके तेरा विश्वास
जबतक टूटे ना सांस बस रहे आशिर्वाद

माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम

कोई और ना मेरा मन में दुखों का डेरा नश्तर चुभे जो चाहे तेरे हाथों का फेरा
धरती माँ से जो सीखा मेरी रग रग में घोला गुनाहों की सजा को हंस हंस के झेला

तेरी हर सीख मेरे लिए बनी निजाम
माँ तुझे नमन है प्रतिपल प्रणाम

-अभिषेक प्रतापसिंह
अधीक्षक

धूम्रपानः एक सस्ता शौक या एक महँगी मौत?

दोनों हाथ जोड़कर एक विनम निवेदन उन सभी से जो धूम्रपान करते हैं, फिर चाहे वो लत हो या शौक, टेंशन से निजात पाने के लिए हो या फिर अपने आपको सबसे अलग और स्टाइलिश दिखाने के लिए, निवेदन सबसे सिर्फ एक ही है, फिर चाहे आप मेरे बड़े भाई जैसे हों या छोटे भाई जैसे, मेरे करीबी दोस्त हो, ऑफिस के सीनियर हों या कॉलेज के जूनियर, मेरे कोई करीबी नाते-रिश्तेदार हों या फिर कोई अजनबी ही सही, और वो निवेदन ये है कि,

"धम्रपान निश्चित तौर पर जानलेवा है, इसे आज ही बंद करें"

धूमपान और इसके दुष्प्रभावों से सभी परिचित हैं. तो आज इस से जुड़ी ऐसी कुछ भ्रांतियों पर मैं प्रकाश डालूंगा, जोकि हम सभी ने किसी न किसी धूम्रपान करने वाले से कभी न कभी जरूर सुनी होगी और साथ ही मैं देने की कोशिश करूँगा कुछ ऐसी जानकारियाँ जो की शायद ज्यादातर लोगों को पता नहीं होंगी या फिर जिनको हम जानते हुए भी नजर अंदाज़ करते हैं। आप स्वयं देख लें की आप किस भांति का शिकार हैं, और आपको क्यों कैसे इसे जल्दी से जल्दी बंद करना चाहिए।

1) स्कूल-कॉलेज जाने वाले अधिकतर छात्र जो धूमपान करते हैं उनको ऐसा लगता है कि इससे वो कूल और स्टाइलिश दिखते, और इससे लोग और मुख्यतः लड़कियाँ उनकी ओर आकर्षित होते हैं। ऐसे लोगों को मैं ये बताना चाहता हूँ की मुझे तो आजतक कोई भी महिला ऐसी नहीं मिली जिसको की धूमपान या धूमपान करने वाला आकर्षक लगा हो। छात्राओं से लेकर गृहणी से लेकर कामकाजी महिलाओं तक सभी इसे एक बुरी आदत मानती हैं और इसका विरोध करती हैं। तो ये तो बिलकुल पान से निकाल दिया जाए की इस से आप किसी को भी, आकर्षक लग रहे हैं।

2) भाई हम तो ऐसे ही शौक-शौक में पीते हैं, कोई लत थोड़े ही है अपने को, जिस दिन चाहेंगे उस दिन छोड़ देगे, और वैसे भी दिन की 1-2 सिगरेट पीने से कौन सा कैसर हुआ जा रहा है? अगर आप भी इस प्रति सी सोच रखते हैं तो आपको दो बातें जान लेना बहुत ज़रूरी है। पहली ये जो शायद आपको पता भी हो, की हर एक पी वी सिगरेट आपकी ज़िन्दगी को करीब 5 मिनट से कम कर देती

है। दूसरी जो शायद आपको ना पता हो, की अगर आप सिगरेट पीना आज छोड़ देंगे तो भी पहले की पी होगी सिगरेटों ने आपके शरीर में जो कार्बन/ टार जमा किया होगा, उसको पूरी तरह से बहार निकालने में आपके शरीर को 10-12 साल लगेंगे । मतलब अगले इतने सालो तक वो आपके शरीर के अंदर ही रहेगा, और इतने साल तो तब, जब कि आप आगे और सिगरेट नहीं पियेंगे और हम अगर ये सोचते हैं 10-12 साल तक अंदर रहने के बाद भी वो कार्बन/ टार कैंसर नहीं बनाएगा, तो या तो हम अत्यंत आशावादी हैं, और या तो अत्यंत मूर्ख और रही बात लत की, तो वो किसी को माँ के पेट से तो होती नहीं है, ऐसे ही धीरे-धीरे पड़ जाती है और हमको पता भी नहीं चलता । तो समझदार बने, इसे आज ही छोड़ें।

3) अकेले तो सिगरेट नहीं पीता मैं, लेकिन क्या है की सारे दोस्त पीते हैं तो उनको पीता देख कंट्रोल थोड़ा मुश्किल हो जाता है, तो फिर पीना पड़ता है। अगर आप नहीं पीते हैं तो कोई बात नहीं, लेकिन ये सच है की अगर आप और आपके आसपास सभी धूमपान करते हैं तो ऐसे में खुद पर काबू रखना मुश्किल होता है । तो ऐसे में सभी धूमपान डोड़ने का एक सामूहिक प्रयास कर सकते हैं । सब एक-दूसरे की ताकत बन सकते हैं। कभी एक का मन किया तो बाकी सब ने उसका ध्यान बटाने में मदद की । और सच्ची दोस्ती यही है । गलत आदत मुझे अकेले नहीं छोड़नी है, सब दोस्तों की छुड़ानी भी है । और समझने वाली बात है की अगर 10 दोस्तों में से 9 पीते रहेंगे तो दसवाँ चाह के भी नहीं छोड़ पायेगा । लेकिन अगर 10 मित्र एकसाथ ये निश्चय कर लें, तो यह लिखित है कि उस ग्रुप में दोबारा कभी सिगरेट नहीं जलेगी।

4) वो क्या है कि हम सिगरेट सिर्फ शराब के साथ पीते हैं, वरना शराब नहीं चढ़ती है, बिना शराब के तो हम सिगरेट कभी नहीं पीते। अगर आप भी इस भ्रान्ति से इत्तेफ़ाक़ रखते हैं तो सावधान हो जाइये । क्योंकि आपके चिंता करने की अब दो वजहें हैं । पहली ये कि आप शराब पी-पी के इतने ज़हरीले हो चुके हैं की अब सिर्फ शराब चढ़नी बंद हो गयी है आपको । दूसरी है बेवकूफी, की शराब की वजह से लिवर और किडनी तो पहले ही खतरे में थी, हमने सिगरेट पी के फेफड़ो को भी लिस्ट में ले लिया । ये सही मायनों में आत्महत्या है, एक धीमी, बिल्कुल शान्ति से की हुयी आत्महत्या !! तो सोच बदलें और आत्महत्या ना करें।

5)भाई आलरेडी कम कर दी है, दिन की 12-15 पीते थे, अब 6-7 पे आ गए हैं, धीरे से ये भी बंद हो जायेगी। ये सबसे प्रचलित

तरीका है दूसरों को, या यूँ कहें कि खुद को बेवकूफ बनाने का। मैंने ऐसे कई लोग देखे हैं जो 10 साल से कम कर चुके हैं और छोड़ आज तक नहीं पाये। और ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने छोड़ने के बाद 8-8 साल से एक भी कश नहीं लगाया। फर्क सिर्फ यही था की सफलतापूर्वक छोड़ने वालो ने सिगरेट कम नहीं की कभी, सीधे पीना ही छोड़ दिया उन्होंने। तो एक दिन और, या एक सिगरेट और तो छोड़िये, एक कश भी और नहीं लेना है। अगर लगातार शरीर को नशा मिलता रहेगा तो वो कभी भी उसके प्रभाव से मुक्त नहीं हो पायेगा। अचानक छोड़ देने से शुरुआत में तो ज़रूर तलब लगेगी लेकिन अगर उस 20-25 दिनों को मज़बूती से झेल गए तो धीरे धीरे उसकी लत से बाहर आया जा सकता है। तो कम करने का तरीका छोड़कर, ये जो हाथ में है इसको बुझाइए, और निर्णय कर लीजिये की अब दोबारा कभी धूम्रपान नहीं करेंगे।

बुझाइए, और निर्णय कर लीजिये की अब दोबारा कभी धूम्रपान नहीं करेंगे।

6) ''अरे अब तो डरने की कोई बात ही नहीं है, अब तो कैंसर का इलाज हो जाता है।'' ये है सबसे ज़्यादा घातक, अति-आत्मविश्वास से भरी हुयी एक भ्रान्ति। ये उल्लेखनीय है कि कैंसर अगर अपने शुरूआती दौर में पकड़ में आ जाए तो उसका इलाज हो सकता है। लेकिन इलाज अगर ठीक तरह से ना किया जाए तो कैंसर वापस भी आ जाता है। और कैंसर का एकमात्र इलाज

कीमोथेरेपी ना तो इतना सस्ता है की सबके बस में हो, और ना ही इतना अचूक कि उसको करवाने के बाद कैंसर लौटेगा नहीं ये गारण्टी मिल पाये। और ये सब तो तब है जब कि कैंसर अपने शुरुआती दौर में पकड़ में आ पाये। वरना अधिक बढ़ जाने पर कैंसर का आज भी कोई इलाज नहीं है। और हेल्थलाईन के आंकड़ो के मुताबिक 84% फेफड़ो का कैंसर एडवांस्ड स्टेज में ही पता चलता है और इन 84% में से सिर्फ 4% के आसपास के ही लोग होते हैं जो पाँच वर्ष या उस से अधिक की जिन्दगी जी पाते हैं। 84% लोगो के शरीरों को कैंसर दीमक की तरह चाट जाता है, और पता भी तब चलता है जब की शरीर में ठीक होने लायक कुछ बचा ही ना हो। और कैंसर एक ज़हर है, जो बड़ी ही आसानी से आपके शरीर के दूसरे अंगो में फैलकर उनको भी अपनी चपेट में लेता है। फेफड़ो का कैंसर कैसे नीचे उतर कर लिवर और पित्ताशय तक और ऊपर चढ़कर कंधो तक पहुँच जाएगा ये पता ही नहीं चल पायेगा, और जब तक पता चलेगा तब शायद बहुत देर हो चुकी होगी।

7) ''अरे मेरा एक दोस्त तो 10 साल से सिगरेट पी रहा है उसको तो कुछ नहीं हुआ,

मुझे तो मुश्किल - अभी 2-3 साल हुए हैं। कैंसर होगा तो पहले उसको होगा। तब तक हम छोड़ देंगे।'' ये भी एक भ्रान्ति से अधिक और कुछ भी नहीं है । हर व्यक्ति की शारीरिक-संरचना अलग होती है और इसी प्रकार से किसी बाहरी चीज़ को लेकर उसमें होने वाली प्रतिक्रिया भी अलग होगी। जैसे की किसी को सर्दी-जुखाम जल्दी हो जाता है, वहीं कोई बड़ी आसानी से सर्दी को झेल लेता है। तो ज़रूरी नहीं की अगर आपके मित्र को 10 साल में कैंसर नहीं हुआ तो आप भी उतने ही किस्मत-नशीन होंगे। तो इसी लिए समझदार बने, और ऐसे किसी बेफिजूल सी बात में फँसकर अपने जीवन से मज़ाक ना करें । और अंत में सबसे आध्यात्मिक भ्रान्ति

8) ''मरना तो एकदिन सभी को है, भाई जो धूम्रपान नहीं करता है, वो कौन सा क़यामत के दिन तक जीने वाला है''। अगर कोई ये तय करके बैठा है की भाई कैंसर से ही मरना है तो ठीक है, लेकिन ये सोचो कि जो तुम्हारे पीछे रह जाएंगे उनकी क्या गलती है। और वो सड़क पे आ जाएंगे, क्योंकि तुमने भले ही अपनी इस कु-लत को अपनी नियति मान लिया हो, लेकिन तुम्हारे पिताजी अपना घर अपनी ज़मीन ज़रूर बेचेंगे तुम्हारे अच्छे से अच्छे इलाज के लिए । तुम्हारी पत्नी शायद अपने गहने बेचकर, बच्चों को स्कूल ना भेज कर, महीने के राशन में से पैसे बचाकर, तुम्हारे कीमोथेरपी सेशंस के लिए पैसे बचाएगी। तो इतने सारे लोगों को क्यों सजा देना भाई, सिगरेट तो सिर्फ तुमने पी? और मान लीजिये कि आप किसी धनकुबेर के घर जन्में हैं, और आपके पास अथाह पैसा है, तो भी क्या आपके पिताजी ने, दादाजी ने, आपने खुद, अपने जीवन में अथक परिश्रम करके क्या सबकुछ इसीलिए बनाया था की एक दिन इसको जाकर किसी कैंसर अस्पताल को चंदे में दे देना है? ये बात सही है की कोई शौक ना करने वालों को भी कैंसर हो जाता है, पर रास्ते पर जा रहे एक आदमी को साँप काट ले वो अलग बात है, और साँप के आगे जमीन पर लोट-लोटकर नाचना की वो काट ले एक अलग बात है । ये हमारी समझदारी पर निर्भर करता है कि हम क्या चुनते हैं।

पिछले 10 वर्षों में एक सिगरेट की औसत कीमत 10 रूपए मान लीजिये। एक दिन में 10 सिगरेट पीने वाले का खर्च 100 रूपए, सालभर के 36500 और पिछले 10 साल में 3 लाख 65 हज़ार हमने खर्च किये ताकि हम कैंसर जैसी बीमारी को बुला सकें और उसको और चढ़ावा चढ़ा सकें । हम से समझदार कौन??

मरना भले ही सबको हो, लेकिन मौत कैंसर जैसी हो, की जिसमें मरने वाले को भी पता है

और घरवालों को भी। सोचो क्या भयंकर मंज़र होगा जब तुम भी सोच रहे होगे कि क्या कुछ रह गया जो तुम बस सोचते रह गए और कर नहीं पाये और परिवार वाले सोचेंगे कि इस ज़रा से बचे वक्त में तुम्हारे लिए क्या क्या कर डालें। तो इस विषम परिस्थिति में खुदको और अपने परिवारवालों और इष्ट मित्रों को ना डालें। धूम्रपान आज ही छोड़ें, अभी ही छोड़ें।

-पियूष सिंह
कर सहायक, लेखा अनुभाग

सचल दूरभाष यंत्र (मोबाईल)

वैसे तो मैं हर तरह के फिल्मों का शौकीन हुँ, लेकिन पिछले दिनों जी क्लासिक चैनल पर आनेवाली शराबी फिल्म का एक डायलाग ''मेरे जिन्दगी का तम्बु तीन बम्बू पर टिका है, शराब, शायरी, और आप मेरे दिल को छु गई और अचानक मैं, हाथ में लिए हर मोबाईल के साथ यह सोचने लगा, यह कहना भी गलत नहीं होगा की आज के नौजवानो की जिन्दगी का तम्बु भी तीन बम्बु पर टिका है, वो मोबाईल , डेटा और पतली पिन वाला चार्जर है। किसी जमाने मे रोटी, कपड़ा और मकान इंसान की तीन मुल जरुरत हुआ करती थी पर आज मोबाईल इंसान की पहली जरूरत बन गई है, इसके बिना ऐसे लगता है, जैसे सोमरस बिना पार्टी , दीया बिना बाती, और दूल्हा बिना बाराती। आज की युवा पीढ़ी और चार्जर की हालत एक जैसी हो गई है. ये सारा दिन फोन में घुसे रहते हैं, और चार्जर उनके मोबाईल मे। इसे आज के पीटी का शौक कहे या जरूरत मालूम नहीं लेकिन अगर यह मसला वाटस्ॲप, फेसबुक, ट्वीटर, यू-ट्यूब आदि का हो तो शौक कहीं पर मामला अगर मोहब्बत का हो तो कुछ भी कहने की जरूरत ही नहीं।

आज भी याद है बचपन का वो जमाना जब हाथ में तीन रुपये मिलने पर बाजार से पारले-जी खरीदते थे, पर आज कल के बच्चे 2G, 3G और 4G, डेटा खरीदते है। प्रकिया समान है पर प्रवृत्ति बदल गई।

आज के समय के एक नवजात शिशु को भी खेलने चप रहने के लिए मोबाईल से फिल्मी गाने और विडिओ दिखाया जाता है, जबकि हमे याद है। रोने पर लल्ला लल्ला लोरी .... सुनाया जाता था और इससे काम जा चले तो दो चपेटमा लगती थी । बचपन में मैने टेलिफोन को उस दिन बहुत आश्चर्य से देखा था, चला कि इससे दूर बैठे किसी भी इंसान से बात हो सकती है। लेकिन आज यही बात सामान्य लगती है।

वक्त बीता, टेलिफोन मोबाईल बन गया और हम समय के उस पड़ाव में पहुचं गए, जिस उम में दिल जलां और ख्वाहिशे रंगीन हो जाती है, और जहाँ मोबाईल , डेटा और पतली पिन बाला चार्जर अपनी अहम जिम्मेदारी निभाते है। व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्वीटर, पर नए दोस्त बनाए जाते है। मोबाईल से ही कितनों के दिल जुड़ते हैं, और कितनों के दिल टुटते है। गोबाईल से दिल की बात कहना अब आसान हो गया है, जबकि मेरे

स्कूल के कई दोस्त मोबाईल के अभाव में दिल की बात कागज पर लिखने के जुर्म मे ना जाने कितनी बार पीट चुके हैं। बडी विडंबना है की, पहले घर से हम माता-पिता के पैर छू कर निकलते थे, पर आज मोबाईल की बैट्री फुल करके निकलते हैं। अफसोस आजकल के युवा के पेट में भोजन ना हो तो चलेगा पर, मोबाईल की बैटरी चार्ज ना हो तो कितनो के गुर्दे छिल जाते है। माना जाता है, कि उल्लू, बीमार, चौकीदार और आशिक ये चार तरह के जौब रात में जागते हए पाए जाते है, पर चौथी श्रेणी के जीव के लिए मोबाईल, डेटा और पतली पिनवाला चार्जर भगवान के वरदान समान है। वजह आप सब को पता है। खैर छोड़ीए, आगे बढ़ते है और अपनी चटपटी गातो का सिलसिला जारी रखते हैं।

दोस्तो, समय एक जैसा नहीं रहता, ईश्वर की माया, कभी धूप, कभी छाया। इसी सिलसिले में हमारी मेहनत रंग लाती है और हम दाम्पत्य जीवन के दहलीज पर पहुंच जाते है और इन्सान मोबाईल से चूहे, बिल्ली का खेल खेलने लगता है । पहले जिसका फोन आने पर दिल झूम जाता था, अब फोन आने पर दिल डूब जाता है । जिम्मेदारियो से भरे दाम्पत्य जीवन में इंसान मोबाईल से थोडा झूठ-सच बोलकर अपनी आजादी को जी पाता है। कभी कभी मोबाईल पति-पत्नी के झगड़े के बीच का वजह बनने में जरा भी संकोच नहीं करता, उनके कलह के दिलकश मुहिम में अपना शत-प्रतिशत हाथ बटाता है। मोबाईल ने लोगों को जितना जोडा है, उसने रिश्तों को उतना दूर भी कर दिया है। पहले हर त्योहारोंपर संबंधियों से मिलना जुलना होता था, पर अब हर त्योहार मोबाईल पर ही मनाते हैं। ज्यादा से ज्यादा विडियो कालिंग कर के अपनों से बात करते हैं, पर अपनों कि बीच मोबाईल कही ना काही एक खाई बनता जा रहा है, जो इंसान को अपनों से दूर करता जा रहा है। इस खाई को बढ़ने ना दे..... !

-अन्वित कुमार
कार्यकारी सहायक

सर्वोत्तम – मन की शांति

आज के बदलते समाज में हर वस्तु, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक रिश्ता और मानसिक सोच निरंतर परिवर्तन-शील है। हर आने वाले पल में व्यक्तिगत स्तर पर उस पल-स्थिति के प्रति की जाने वाली प्रतिक्रिया भी भिन्न-भिन्न होती है। किसी एक पल में विद्यमान स्थिति के प्रतिकार के रुप मे एक इंसान के द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया दूसरे इंसान के द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया से उलट भी हो सकती है। यह प्रतिक्रिया कई कारकों पर निर्भर करती है। उन कारकों में से कुछ कारक जैसे पारिवारिक, सामाजिक और शैक्षणिक होते है। ये कारक काफी भारी-भरकम प्रतीत होते है। जैसे पारिवारिक कारक को ही लेते है। परिवार से मिलने वाली वैचारिक व व्यावहारिक शिक्षा किसी एक दिन का परिणाम नहीं होती है। यह तो दिन पर दिन जुडने / मिलने तथा ऱ्हास होने वाली शिक्षा का सम्मिलित परिणाम होती है। किसी दिन परिवार में सिखाया जाता है कि सत्य का वाचन, आचरण और प्रसार करना चाहिये। किसी दूसरे दिन हम स्वयं ही उस सत्याचरण की लीपा-पोती कुतर्कों, झूठे व बनावटी आंडबरों से करते दिखाई देते है। तो अब सत्याचरण कहाँ गया? वह नहीं गया जहाँ वह सदैव विद्यमान रहता है। घनघोर एकांतवास में तो इसी प्रकार से इन शिक्षाओं का देना और ऱ्हास होता है। लेने वाला समझ ही नहीं पाता क्या ले और क्या ना लें। यही समस्या देने वाले के साथ होती है। वह भी जानता कुछ है, मानता कुछ है, देता कुछ है और स्वयं करता कुछ है। यह एक तरह की बीमारी है और पूरे विश्व की संपूर्ण मानव - जाति, प्रत्येक इंसान इससे पीडित है। इस स्थिति में ''स्वार्थ'' ही मार्गदर्शन बल .... सिध्द होता है। तुरंत मिलने वाले फायदे को प्राथमिकता दी जाती है। कोई नहीं देख रहा है, सडक रिक्त / खाली है - तुरंत लाल लाइट पार कर जाते है। इस तरह के उदाहरण असंख्य है। इनसे आज हमें लगता है कि हम जंग जीत गये, औरों से आगे निकल गये पर इसके गंभीर दूरगामी परिणाम किसी एक व्यक्ति, शहर अथवा देश तक सीमित नहीं रहते। उसने और इस प्रकार की कुवैचारिक शक्ति से प्रत्येक इंसान यहाँ तक की पशु - पक्षी भी प्रभावित होते है। अब, इसी का ही तो परिणाम है कि कुछ पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ ही विलुप्त हो चुकी है। कल मानव जाति का विलोपन भी हो जायेगा।

जाने किस दौड़ को जीतने की चाह लिये

इंसान बेसुध होकर दौडा जा रहा है। ''विराम'' शब्द तो जैसे शब्दकोश से ही विलुप्त हो चुका है। कार्य किये जा रहे है परन्तु संतोष नहीं। कार्यों के होने के बावजूद एक पल की शांति का अनुभव नहीं। फिर दूसरे अन्य लक्ष्य या कार्य को लेकर दौडना। सच मानिये तो यह दौड, भागम-भाग व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

निकट के लाभ को देखते हुये उठाये गये कदमों से न सिर्फ क्षणिक सुख मिलता है बल्कि अशांति हमारे मन मस्तिष्क मे घर कर जाती है। इस मनोदशा के शिकार व्यसक व संभ्रांत परिवारों मे रहने वाले व्यक्ति ही नहीं, हमारे नन्हें -मुन्ने बच्चे भी है। क्योकि यह सब हम ही उन्हें सिखाते है। इस कारण आज समाज में आदर्श विद्यार्थी नहीं मिल पाते, आदर्श नागरिक नहीं मिल पाते और समाज के नैतिक मूल्यों का दिन पर दिन न्हास होता चला जाता है जिनकें असंख्य साक्ष्य हमारे चारों ओर हर पल दिख जाते है। हमारे समाज की व्यवस्था भी इसी का शिकार बन चुकी है। व्यवस्था में फैली अनैतिकता, गलत आचरण तो जैसे इसके सहायकारी मापदण्ड बन गये है। अपराधी (विचाराधीन) और प्रत्यक्ष अपराधिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति चुन लिए जाते है। तो कैसे यह मान लिया जाये कि व्यवस्था सुधरेगी। जैसा चल रहा है, चलने दो व चलाते रहो.... प्रवृत्ति घातक स्तर पर आ चुकी है। इसका इलाज अब नहीं किया गया तो इतनी देर हो जायेगी जहाँ से वापस लौटना असंभय होगा।

संक्षेप में यदि कहा जाये तो यही सामने आता है कि मानसिकता तथा उससे पैदा होने वाली बुराइयों का अंत केवल एक हथियार से किया सकता है। वह हथियार है-मन की शांति को स्थापित करना। यदि एक व्यक्ति के मन में शांति का वास, स्थायित्व हो गया तो मन - मस्तिष्क व्यर्थ की वस्तुओं के पीछे नहीं दौडेंगा। वह जल्दी, भागमभाग वाली जिंदगी में वास नहीं करेगा। अर्थात वह प्रत्येक वस्तु, कार्य को शांत मन-मस्तिष्क से सोच - विचार कर सही निर्णय पर पहुँचेगा। इस प्रकार से स्वयं ही सभी समस्याओं का निवारण हो जायेगा।

मनो-शांति का स्थापित होना व सभी प्रकार की समस्याओं का निवारण होना। कहने में आसान है, कहने-सुनने में अच्छा लगता है पर लागू करें तो कैसे। किसी अच्छी प्रकार की आदत अथवा कार्य करने के लिये अति आवश्यक अडिग लगन का न होना भी हम सबकी कमजोरी है। परन्तु जिस प्रकार

करत-करत अभ्यास के, जडमति होत सुजान। रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥

की कहावत चरितार्थ हे और जहाँ चाह, वहाँ राह वाली

लगन विद्यमान है, वहाँ राहें भी स्वयं बन जाती है। क्या इंसान कोशिश करते - करते चाँद तक नहीं पहुँच गया ? और आगे जाने की कोशिशें भी की जा रही है। उसी प्रकार

मन की शांति प्राप्त करके सही मायनो में हम 'वसुधैव कुटुंबकम' को साकार रुप दे सकते है। जहाँ तक मुझे प्रतीत होता है, मन की शांति प्राप्त करने का एकमात्र उपाय निम्न हो सकता है।

भगवान का ध्यान (प्रभु स्मरण) प्रातः उठते ही हमें स्वयं व अपने बच्चों को प्रभु स्मरण के लिये बैठना चाहिये। यह ॐ के उच्चारण के साथ या किसी सुन्दर भजन गायन के साथ संभव है। इसका अभ्यास करते - करते हममें स्वतः ही सभी के प्रति मैत्रीभाव का सृजन होगा। पूरे दिनभर ध्यान रखें कि हमारा अस्तित्व क्यो है। एक निरीह चींटी मे भी उसो प्रभु का वास है जिसका एक अंश मात्र हममें है। ऐसा करने मात्र से हममें एक ठहराव, एक सहजता उत्पन्न होगी और सात्विक विचार ही जन्म लेंगे। हमें हमारे चारों ओर प्रभु ही नजर आयेंगे और हम व्यर्थ की छिना-छपटी, धनु या अन्य प्रकार के कुकर्मो से बच जायेंगे।

और देखते ही देखते चारों ओर शांतिमय वातावरण हो जायेगा। ऐसा किसी एक या दो व्यक्तियों को नहीं करना होगा अपितु मानव जाति के प्रत्येक जन को करना होगा क्योकि समाज को सुन्दर, स्वच्छ व शांतिमय बनाने की जिम्मेदारी प्रत्येक जन की बनती है।

-राजकुमार
अधीक्षक

शिक्षक

मत पूछिए कि शिक्षक कौन है ?
आपके प्रश्न का सटीक उत्तर आपका मौन है।
शिक्षक न पद है, न पेशा है,
न व्यवसाय है।
न गृहस्थी चलाने वाली कोई आय है।
शिक्षक सभी धर्मों से उंचा धर्म है।
गीता में उपदेशित मा फलेषु' वाला कर्म है।
शिक्षक एक प्रवाह है।
मंजिल नहीं एक राह है।
शिक्षक एक पवित्र है।
महक फैलाने वाला इत्र है।
शिक्षक स्वंय जिज्ञासा है।
खुद कुआं है पर प्यासा है।
वह डालता है चांद सितारों, तक को तुम्हारी झोली में।
वह बोलता है बिल्कुल, तुम्हारी बोली में
वह कभी मित्र, कभी माँ तो, कभी पिता का हाथ है।
साथ जा रहते हुए भी, ताउम्र का साथ है।
वह नायक, खलनायक तो कभी विदूषक बन जाता है।
तुम्हारे लिए न जाने, कितने मुखौटे लगाता है।
इतने मुखौटों के बाद भी, वह समभाव है।
क्योंकि यही तो उसका सहज स्वभाव है।
शिक्षक कबीर के गोविन्द सा, बहुत उंचा है।
कहो भला कौन, उस तक पहुँचा है।
शिक्षक एक विचार है, दर्पण है, संस्कार है।
शिक्षक न दीपक है, न बाती है, न रोशनी है।
वह स्निग्ध तेल है, क्योंकि उसी पर दीपक का सारा खेल है।
शिक्षक तुम हो, तुम्हारे भीतर की प्रत्येक की अभिव्यक्ति है।

कैसे कह सकते हो कि, वह केवल एक व्यक्ति है।
शिक्षक चाणक्य, सान्दिपनी तो कभी विश्वामित्र है।
गुरु और शिष्य की प्रवाही परंपरा का चित्र है।
शिक्षक भाषा का मर्म है, अपने शिष्यों के लिए धर्म है।
साक्षी और साक्ष्य है, चिर अन्वेषित लक्ष्य है।
शिक्षक एक सत्य है, स्वयं एक तथ्य है।
शिक्षक उसर को उर्वरा करने की हिम्मत है।
'स्व' की आहुतियों के द्वारा, 'पर' के विकास की कीमत है।
वह राष्ट्रपति होकर भी, पहले शिक्षक होने का गौरव है।
वह पुष्प का बाह्य सौंदर्य नहीं, कभी न मिटने वाला सौरभ है।
हाँ अक्षर ढूँढोगे, तो उसमें सैकड़ो कमियाँ नजर आयेंगी।
तुम्हारे आस-पास जैसी ही. कोई सूरत नजर आयेगी।
लेकिन यकीन मानो जद, वह अपनी भूमिका में होता है।
तब जमीन का होकर भी, वह आसमान सा होता है।
अगर चाहते हो उसे जानना, ठीक-ठीक पहचानना।
तो सारे पूर्वाग्रहों को मिट्टी में गाड़ दो।
अपनी आस्तीन पे लगी, अहम की रेत को झाड़ दो।
फाड़ दो वो पन्ने, जिनमें बेतुकी शिकायत हैं।
उखाड़ दो वो जडें, जिनमें छुपे निजी फायदे हैं।
फिर वह धीरे-धीरे स्वतः समझ में आने लगेगा।
अपने सत्य स्वरुप के साथ, तुम में समाने लगेगा।

-प्रत्युष कुमार
कर सहायक

राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान

अपने देश में नारी की गरिमा कई सालों से एक शक्ति के रुप में उजागर है। ऋषिमुनियों के इस देश में, सम्राट अशोक, भगवान महावीर और तथागत बुद्ध ने अपने विचारों में नारी का समाज प्रबोधन में योगदान को महत्व दिया है। एक सक्षम, शिक्षित परिवार को चलाने में नारी का योगदान बरसों से महत्वपूर्ण रहा है। पुरातन काल में मनुष्य जीवन उनके आयुके पडावों मेंचार आश्रम में विभाजित कर दिया था। ब्रम्हचर्य आश्रम में जब कोई शिष्य गुरुकुल में विद्याग्रहन करने हेतु जाता था, तो आयु के आँठवे साल से उसके जीवन में गुरु के रुप में छलकता था, एक आदर्श गुरु के रुप में छलकता था। गुरुमाता के सभी कार्यों में हाथ बटाकर ज्ञानार्जन करना उसे गृहस्थाश्रम के लिए सक्षम बनाता था। महिलाओं के इसी योगदान के कारण ही अपने भारतवर्ष में महान व्यक्तित्व नसीब हुए।

प्राचीन भारत के बाद जब हम मध्ययुगीन भारत की ओर चलते है, तो बहुत सी नारियों ने अग्रेंजो की गुलामी में आजादी हेतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में योगदान दिया है। अरुणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन, झाँसी की रानी, राजमाता जिजाबाई इन्होंने अपने समाज में स्वतंत्रता की ज्योति को उजागर करते हुए, या तो खुद संग्राम में उतर गयी, या अपने संस्कार, विचारों से स्वतंत्रता सेनानी तैयार किये। समाजप्रबोधन में, सावित्रीबाई फुले, रमाबाई आंबेडकर, पंडिता रमाबाई आदि महिलाओं ने खुद के परिवार या नाम से बढ़कर समाज प्रबोधन का कार्य जारी रखा। स्वतंत्रता संग्राम के इस पर्व में महिलाओं का योगदान उतना ही सक्रिय और सक्षम रहा, जिससे की हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

आजादी के बाद इस देश में महिलाओं के सक्षमीकरण हेतु बहुत से कानून बनाये गए जिसमें राज्यघटना के शिल्पकार डॉ.आंबेडकरजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्र भारतवर्ष में महिलाओं ने हर एक पद पर कार्य करके उस पद की प्रतिष्ठा बढा दी, जिनपर केवल पुरुष अपना अधिकार जमाते थे। इन यशस्वी महिलाओं में प्रधानमंत्री कै रुप में श्रीमती इंदिरा गंधी, भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटील, पुलिस आयुक्त, डॉ.किरण बेदी और विद्यमान वित्तमंत्री निर्मला सीतारमणजी को सहभाग रहाहै। सरकारी नौकरियों में महिलाओं को तीस प्रतिशत आरक्षण के बाद सरकारी क्षेत्र में महिलाओं का काफी मात्रा में प्रवेश हुआ

और एक नई चुनौती के रुप में इस देश के समाने समस्या खडी हुई । उसमें बादमें कानूनी सुधार करके, कार्यस्थल पर महिला सुरक्षितता के सन्दर्भ में काफी विधेयक लाए गये । घरेलू हिंसा तथा तलाक प्रथा के खिलाफ सरकार ने सख्ती से कदम उठाए, जिसमें महिला निर्माण होकर इस देश के प्रति अपना कर्तव्य निभा सके।

राष्ट्र निर्माण के कार्य में महिलाओं को और ज्यादा सक्षम बनाने हेतु मेरे मन में यह विचार आया की 'स्त्री' समस्त सृष्टि की जननी है, इसे सर्वप्रथम आनेवाल सन्तानों की निर्मिती के बारे में प्राथमिकता देनी चाहिए। गर्भावस्था के दिनों में तथा प्रसव के बाद, उसे वह चाहती है, जितनी, उतनी सुविधाएँ देनी चाहिए, चाहें वह घर की औरत (गृहिणी) हो या कार्यस्थल में कार्यरत महिला । अगर अपने देश की नई पीढ़ी सुदृढ, सुविचारी और संस्कारी बनेंगी, तभी देश की तरक्की सहीं रुप में होगी। नारी को अबला से सबला अपने स्वार्थ के लिए, देशहित के लिए ही करना है। देश का हर व्यक्ति अगर महिलाओं को माता भगिनी के रुप से देखेगा तो ही वह।

अन्त में मैं यही कहना चाहता हूँ कि,
'खुद को अबला समझना छोड दे ऐ नारि,
तू तो इस धरा की निर्माती है।
सँवार अपने में वह शक्तियाँ,
जो दुर्जनों के पतन की अधिकारी है।

जय हिंद!

-प्रशांत देशपांडे
अधीक्षक लेखापरीक्षा
आयुक्तालय

जल संरक्षण क्यों जरूरी हैं।

विकास और लालच ने हमारी जमीन को बंजर बना दिया। अधिकांश नदियों, तालाबों, झील, पोखरी का अस्तित्व मिट गया। गंगा, यमुना जैसी जीवनदायिनी नदियों को हम नालों में तब्दील कर रहे हैं। शहरों में कंक्रीट के जंगलों के बीच हम इतने बेसुध हो गए है कि हम भविष्य के खतरे की आहट ही नहीं सुनाई पड़ रही है। वास्तव में जल ही जीवन का आधार है, जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। धरातल पर तीनचौथाई पानी होने के बावजूद भी पीने योग्य पानी एक सीमित्त मात्रा में ही है। उस सीमित मात्रा के पानी का इंसान ने अंधाधुध दोहन किया है। नदी, तालाब और झरनों को पहले ही हम कैमिकल की भेंट चढ़ा चुके हैं, जो बचा खुचा है उसे अब अपनी अमानत समझ कर अंधाधुंध खर्च कर रहे हैं। जबकि भारतीय नारी-पीने के पानी के लिए ही औसतन चार मील पैदल चलती है। भारत में विश्व की लगभग 36 प्रतिशत आबादी निवास करती है, लेकिन उसके लिए मात्र तीन प्रतिशत पानी ही उपलब्ध है। भारत में जल संबंधी मौजूदा समस्याओं से निपटने में वर्षा जल को भी एक सशक्त साधन समझा जाए। पानी के गंभीर संकट को देखते हुए पानी की उत्पादकता बढ़ाने की जरूरत है। चूंकि एक टन अनाज उत्पादन में एक हजार टन पानी की जरूरत होती है और पानी का 70 फीसदी हिस्सा सिंचाई में खर्च होता है, इसलिए पानी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सिंचाई का कौशल बढ़ाया जाए। यानी कम पानी से अधिकाधिक सिंचाई की जाए। अभी होता यह है कि बांधों से नहरों के माध्यम से पानी छोड़ा जाता है, जो किसानों के खेतों तक पहुंचता है। जल परियोजनाओं के आंकड़े बताते हैं कि छोड़ा गया पानी शतप्रतिशत खेता तक नहीं पहुंचता। कुछ पानी रास्ते - में आप बनकर उड़ जाता है, कुछ जमीन में रिस जाता है और कुछ बर्बाद हो जाता है। पानी के लिए कितना है यह हम इसी बात से जान सकते हैं कि हमारी भाषा में पानी के कितने अधिक महावरे हैं। अगर हम इसी तरह कथित विकास के कारण अपने जल संसाधनों को नष्ट करते रहे तो वह दिन दूर नहीं, जब सारा पानी हमारी आंखो के सामने से बह जाएगा और हम कुछ नहीं कर पाएंगे। पानी के बारे में एक नहीं, कई चौंकाने वाले तथ्य हैं। विश्व में और विशेष रूप भारत में पानी किस प्रकार

नष्ट होता है, इस विषय में जो तथ्य सामने आए हैं उन पर ध्यान देकर हम पानी के अपव्यय को रोक सकते हैं। अनेक तथ्य ऐसे हैं जो हमें आने वाले खतरे से तो सावधान करते ही हैं, दूसरों से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं और के महत्व व इसके अनजाने स्त्रोतों की जानकारी भी देते हैं। दिल्ली, मुंबई और चैन्नई जैसे महानगरों में में पाइप लाइनों के बॉल्व की खराबी के कारण रोज 17 से 41 प्रतिशत पानी बेकार बह जाता है। इजराइल में औसतन मात्र 10 सेंटीमीटर वर्षा होती है और इस वर्षा से ही वह इतना अनाज पैदा कर लेता है कि वह उसका गिर्यत करता है। दूसरी और भारत में औसतन 50 सेंटीमीटर से भी अधिक वर्षा होने के

बावजूद अनाज की कमी बनी रहती है। ध्यान देने की बात यह है कि यदि ब्रश करते समय नल खुला रह गया है, तो पांच मिनट में 25 से 30 लीटर पानी बरबाद होता है। जबकि विश्व में प्रति 10 व्यक्तियों में से 2 व्यक्तियों को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल पाता है। नदियां पानी का सबसे बड़ा स्त्रोत हैं। जहां एक ओर नदियों में बढ़ता प्रदूषण रोकने के लिए विशेषज्ञ उपाय खोज रहे हैं, वहीं कलकारखानों से बहते हुए रसायन उन्हें भारी मात्रा में दूषित कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में जब तक सख्ती नहीं बरती जाती, अधिक से अधिक लोगों को दूषित पानी पीने का समय आ सकता है। समय आ गया है जब हम वर्षा का पानी अधिक से अधिक बचाने की कोशिश करें। बारिश की एकएक बूंद कीमती है। इन्हें सहेजना बहुत ही आवश्यक है। यदि अभी पानी नहीं सहेजा गया, तो संभव है पानी केवल हमारी आंखों में ही बच पाएगा।

-अन्वित कुमार
कार्यकारी सहायक

कोरोना महामारी में मानव जीवन शैली में परिवर्तन

कोरोना या कोविड-19 शब्द आज प्रत्येक मानव जीवन में दैनिक आदतों में पूर्ण रुप से समाहित हो गया है।

यह शब्द चीन के वुहान शहर में हुए बायलॉजिक बम विस्फोट से सर्वप्रथम विश्व पटल पर सामने आया । यह एक संक्रमणयुक्त बिमारी है जो जानवरों से मनुष्य और मनुष्य से जानवरों में भी फैल सकती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) ने कोरोना या कोविड-19 को ''वैश्विक महामारी'' घोषित कर दिया है।

यह बिमारी आज चीन के मध्यप्रान्त शहर वुहान से होती हुई विश्व के ७७ से भी अधिक देशों में अपने पाँव प्रसार चुकी है तथा दिन प्रतिदिन अपनी तेज, रफ्तार से मानव जीवन में परिवर्तन करने में सक्षम रही है ।

आज कोरोना ने महामारी का रुप धारण कर लिया है। मनुष्य यही सोचने में मशगुल था कि हमने बडी-बडी खोजें कर लीं। मंगल ग्रह तक पहुँच गए। अब सब कुछ सम्भव है। कोई देश किसी दुसरे देश से अपने को कम नहीं आँकता था। लोग अपने गुमान में जीते थें। लोगों का जीवन दिन-दूनी रात चौगुनी प्रगति पथ पर दौड़ रहा था। लेकिन अचानक से इस बीमारी ने हमारें बीच आकर जीवन को झकझौर दिया । लोगों को अपने बनाये घर में ही कैद होना एक जुर्म सा साबित हो रहा हैं।

महाशक्तिशाली राष्ट्र इस वैश्विक महामारी के चंगुल में फंस चुके है। सडके, मार्केट और गलिया इत्यादि सुनी हो गई है। जहाँ लोग स्वच्छ होकर चलते है। एक दूसरे से मिलते हैं। अपनी आवश्यकताओं के लिये दिन दुनी रात चौगुनी मेहनत करते हैं, वह सब स्थिर हो गया है।

आज मानव स्वयं को बहुत मजबूर महसूस कर रहा है। और इसी कारण अपने जीवन शैली में भी बदलाव कर रहा हैं।

कोरोना के कारण प्रद्रूषण कम हो गया है। नदियों कां जल साफ हो गया है। दिल्ली से हिमायल की चोटियाँ स्पष्ट दिखाई देने लगी। बैंकों में भीड कम हो गयी। लोगों को एक- दुसरे से मिलना नहीं होने के बराबर हो गया जो आज समय के तराजू में अपने को मिलने केलिये पर्याप्त हैं। पहले लोग काम करते थकते थे और अब और आराम करके थक रहे हैं।

सबका जीवन आज सादगी पूर्ण हो चुका है। अधिकांश लोग दाल रोटी पर निर्भर रहने लगे, लोगों में समानता आ गयी है। नौकर प्रथा भी समाप्त होते नजर आई। अब कोई रसोई में नौकर रखते हुए नजर नहीं आ रहा है। और लोग स्वयं अपना कार्य करने में लगे हुए है। लोगों में महेंगे कपडे और आभूषण पहने एवं खरदीने का रिवाज कोसो दूर हो गया है। यह इस बात की और इशारा करती है कि मानव कहीं न नहीं अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए कडी से कडी मेहनत करता था जबकि इसके बिना भी सादा जीवन आसानी से व्यतित किया जा सकता हैं।

आज लोग परस्पर एक दूसरे का सहयोग कर रहे हैं लोगों में दान-धर्म करने की प्रवृत्ति बढी है यह तत्त्व है कि यदि कारोना अपने पैर इसी तरह पसारता गया तो हमें अपने जीवन शैली में परिवर्तन अवश्य लाना होगा।

जय हिन्द !

-शैलेन्द्र सिंह तोमर
कर सहायक

आत्मनिर्भर भारत

माननीय प्रधान मंत्री जी ने कोविड-19 महामारी से पहले तथा बाद की दुनिया के बारे में बात करते हुए कहा की 21 वीं सदी के भारत के सपने को साकार करने के लिए देश को आत्मनिर्भर बनना जरुरी हो प्रधानमंत्री जी ने इस बात पर बल दिया की भारत को कोविड-19 महामारी के संकट को एक अवसर के रुप में देखना चाहिए।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भरता की परिभाषा में बदलाव आया है। आत्मनिर्भरता, आत्म-केंद्रीत से अलग है। भारत ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की संकल्पना में विश्वास करता है। चूँकि भारत दुनिया, का एक हिस्सा है अतः भारत प्रगति करता है तो ऐसा करके दुनिया की प्रगति में भी योगदान देता है।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद कि जाएगी।

मिशन के चरण :

इस मिशन को दो चरणों में लागु किया जाएगा।

प्रथम चरण : इसमें चिकित्सा, इलेक्ट्रानिक खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि स्थानीय निर्माण और निर्यात को बढावा मिल सके।

द्वितीय चरण : इस चरण में रत्न एवं आभूषण, फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

❊ आत्मनिर्भरता के पाँच स्तम्भ :

1)अर्थव्यवस्था - जो वृद्धिशील परिवर्तन के स्थान पर बडी उछाल पर आधारित हो।

2)अवसंरचना : जैसी अवसरंचना जो आधुनिक भारत की पहचान बन सके।

3)प्रोद्योगिकी : 21 वी सदी प्रौद्योगिक प्रणाली व्यवस्था पर आधारित प्रणाली है।

4) गतिशील जनसांखिकी : जो आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्त्रोत है।

5)मांग : भारत की मांग और आपूर्ति शृंखला को पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए।

आत्ननिर्भर भारत के लिए आर्थिक प्रोत्साहन :-

प्रधानमंत्री जी ने भारत निर्माण की दिशा में विशेष आर्थिक पॅकेज की घोषणा की है यह घोषणा कोविड-19 महामारी की दिशा में सरकार द्वारा की गई पूर्व की घोषणाओं तथा आरबीआय द्वारा किए गए

निर्णयों को मिलाकर 20 लाख करोड रु. का है। जो भारत के सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर है। पॅकेज में भूमि, श्रम तथा तरल और कानूनों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश :

इस अभियान का मुख्य उद्देश सूक्ष्म, लघु एवं मध्यमवर्गीय उद्योग (एमएसएमई) को बढावा देकर भारत से गरीबी एवं बेरोजगारी को दूर करना है। एम.एस.एम.ई. जो कि लगभग 10-12 करोड़ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। इस अभियान के अंतर्गत की गई घोषणाएं इस प्रकार है।

1) 3 लाख करोड के गारंटी फ्री लोन

2) एक साल तक इएमआई चुकाने में मिली राहत

3) इस घोषणा से लगभग 40-45 लाख एमएसएमई को फायदा मिलेगा।

इसके अलावा सरकार वे एमएसएमई की परिभाषा पूरी तरह से बदल दी।

अभ्यास एवं परिश्रम से सहुलियत उत्पन्न की जाती है, यदि इस तथ्य के अनुरुप हम अपनी मस्तिष्क को क्रियाशील बनाए तथा दूसरे पर निर्भर रहने की अपेक्षा जहाँ तक संभव हो अपना कार्य स्वयं करें और अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करे तो हमारे अंदर शक्ति का संचार हो जाता है। इस प्रकार हम जल्दी ही आत्मनिर्भर हो जाऐंगे तथा जीवन भर दौड़ के कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

-प्रत्युष कुमार
कर सहायक

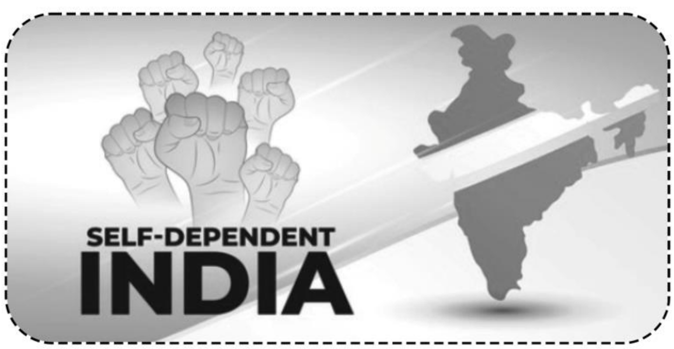

ग्रामीण जीवन शैली बनाम शहरी जीवन शैली :

आज के समय में आदमी मुख्यतः से ही जगह निवास करता है, वो है गाँव अथवा शहर। दोनों ही स्थानों के अपने अपने नफे नुकसान है। गाँव में बेगारी / बेरोजगारी ज्यादा है तो शहर में प्रदूषण। गाँव में भौतिक संसाधनों का अभाव ज्यादा है तो शहर में शान्ति का अभाव। गाँव एवं शहर सामाजिक ढाँचे की बिलकुल विपरीत संरचना है। गाँव में संयुक्त परिवार की प्रचूरता है तो शहर में एकल परिवार का बोलबाला है, प्रकृति से समीपता के दृष्टिकाण से देखें तो ग्रामीण जीवन शैली शहरी जीवनशढली पर हावी होते दिखती है। गाँव में लोग नदी, पहाड़, जंगल, खेल आदि के बिल्कुल सानिध्य में रहते है। लोगों को परिवार का महत्व पता होता है। बड़े बुजुर्ग की कद्र होती है। वहाँ की एकमात्र खामी है कि वहाँ से लोक रुढीवादी एवं अंधविश्वासी होते है। इन सबके ठीक उलट शहर के लोग अत्यन्त खुले विचारों वाले, भौतिक संसाधनों से सुसज्जित और भागमभाग वाली जिन्दगी के स्वामी है। बीते कई दशकों में लोगों का पलायन गाँव से शहर की तरफ पुरजोर है। जो कि एक बहुत बही चिन्ता का कारण है। इसलिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी ने गाँव एवं शहर की बीच वाली संरचना ''रुर्बन'' का एलान किया है। रुर्बन में गाँव एवं शहर की अच्छी चीजों का समावेशन किया जाएगा। इसमें शहर की और होने वाली पलायन से थोडा अवरोध मिलेगा। ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही लोगों को एक राहत मिलेगा और उनके खुद के जीवन शैली में सुधार होगा।

-कुमार गौरव
निरीक्षक

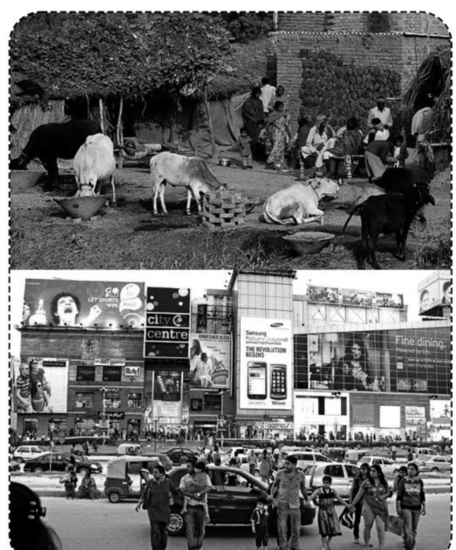

इंसान जाने कहां खो गये हैं?

जाने क्यूं.
अब शर्म से,चेहरे गुलाब नहीं होते।

जाने क्यूं, अब मस्त मौला मिजाज
नहीं होते। पहले बता दिया करते थे,
दिल की बातें। जाने क्यूं,
अब चेहरे, खुली किताब नहीं होते।

सुना है, बिन कहे दिल की बात
समझ लेते थे। गले लगते ही दोस्त
हालात समझ लेते थे।

तब ना गूगल ना स्मार्ट मोबाइल था
ना फेसबुक ना ट्विटर अकाउंट था
एक चिठ्ठीसे ही दिलों के जज्बात
समझ लेते थे।

सोचता हूंहम यहां से कहां आ गये,
प्रेक्टीकली सोचते सोचते भावनाओं
को खा गये।

अब भाई भाई से समस्या
का समाधान कहां पूछता है
अब बेटा बाप से, उलझनों का
निदान
कहां पूछता है
बेटी नहीं पूछती माँ से गृहस्थी के
सलीके
अब कौन गुरु के चरणों में बैठकर
ज्ञान की परिभाषा सीखे।

परियों की बातें अब किसे भाती है
अपनो की याद अब किसे रुलाती है
अब कौन गरीब को सखा बताता है
अब कहां कृष्ण सुदामा को गले
लगाता है जिन्दगी में हम प्रेक्टिकल
हो गये है मशीन बन गये है सब
इंसान जाने कहां खो गये है।

इंसान जाने कहां खो गये है....!

-अभिषेक प्रतापसिंह
अधीक्षक

हिन्दी सप्ताह

(14 सितम्बर 2020 से 18 सितम्बर 2020 तक)

माल एवं सेवाकर तथा उत्पाद शुल्क आयुक्तालय औरंगाबाद हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14.09.2020 से 18.09.2020 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान निबंध लेखन अनुवाद एवं टिप्पण - लेखन तथा आशु लेखन, श्रुत लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमे आयुक्तालय के कार्मिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

श्री.एस.बी. देशमुख, संयुक्त आयुक्त महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया संयुक्त आयुक्त महोदय ने कहा की प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए हिन्दी एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को निरंतर बढ़ाने के लिए अपना कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में करने का आह्वान किया।

हिद्री सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं को नगद पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। साथ ही वर्ष 2019 के दौरान राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन के लिए तीन मण्डल कार्यालायों, मुख्यालय के तीन अनुभागोकों शील्ड प्रदान की गई।

❖ **सरकारी कामकाज़ मूल रूप से हिन्दी में करने पर नगद राशी प्रोत्साहन के रूप में दी जाती है।**

1) **श्री.अन्वित कुमार, कार्यकारी सहायक** - प्रथम

2) **श्री.बालदेव कुमार, कार्यकारी सहायक** - प्रथम

3) **श्री.राजकुमार, कार्यकारी सहायक** - द्वितीय

4) **श्री.प्रत्युष कुमार, कर सहायक** - तृतीय

❖ **वर्ष 2019 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने पर मुख्यालय तथा मण्डल कार्यालय को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान की शील्ड प्रदान की गई :**

अनुभाग (मुख्यालय)	1) प्रशासन अनुभाग	2) लेखा अनुभाग	3) स्थापना अनुभाग
मण्डल कार्यालय	1) ग्रामीण मण्डल	2) शहर मण्डल	3) जालना मण्डल

❖ निबन्ध प्रतियोगिता ❖

क्र.सं.	प्रतिभागी	पुरस्कार
1)	श्री.प्रशांत देशपांडे, अधीक्षक	प्रथम
2)	श्री.सुमित नरवाल, सहायक	द्वितीय
3)	श्री.राजकुमार, अधीक्षक	तृतीय

❖ आशुलेखन प्रतियोगिता ❖

क्र.सं.	प्रतिभागी	पुरस्कार
1)	श्री.विशान्त कुमार, आशुलिपिक	प्रथम
2)	श्री.आकाश त्यागी, कर सहायक	द्वितीय
3)	श्री.शैलेन्द्रसिंह तोमर - कर सहायक	तृतीय

❖ अनुवाद एवं टिप्पणी लेखन ❖

क्र.सं.	प्रतिभागी	पुरस्कार
1)	श्री.शैलेन्द्रसिंह तोमर, कर सहायक	प्रथम
2)	श्री.प्रत्युष कुमार, कर सहायक	द्वितीय
3)	श्री.राजकुमार, अधीक्षक	तृतीय

❖ श्रुत लेखन प्रतियोगिता ❖

क्र.सं.	प्रतिभागी	पुरस्कार
1)	श्री.राजकुमार, अधीक्षक	प्रथम
2)	श्री.आकाश त्यागी, कर सहायक	द्वितीय
3)	श्री.बालदेव कुमार, कार्यकारी सहायक	द्वितीय
4)	श्री.प्रत्युष कुमार, कर सहायक	तृतीय

❖ सहभागी पुरस्कार ❖

1) अखिलेश सिल्सवाल, कर सहायक

2) कुमार गौरव, निरीक्षक

औरंगाबाद आयुक्तालय अधीक्षक संगठन की नई कार्यकारिणी

❖ **अखिल भारतीय केन्द्रीय कर अधीक्षक का संगठन / औरंगाबाद आयुक्तालय अधीक्षक संगठन की नई कार्यकारिणी औरंगाबाद आयुक्तालय में दिनांक 26/02/2021 को अधीक्षक संगठन के चुनाव संपन्न हुए | संगठन की नई कार्यकारिणी निम्नानुसार है |**

क्र.सं.	अधिकारी का नाम	पद
1)	एस.एन. शेख	अध्यक्ष
2)	गोपाल मॉझी	महासचिव
3)	विजय आर. गिराम	उपाध्यक्ष (मुख्य तथा शहर मण्डल)
4)	अतुल पिल्लेवार	उपाध्यक्ष (लेखा परीक्षा तथा सीमा शुल्क)
5)	मिलिंद खेरुडकर	उपाध्यक्ष (ग्रामीण, जालना तथा नांदेड मण्डल)
6)	चंद्रमणिकुमार	संयुक्त सचिव (मुख्य तथा शहर मण्डल)
7)	विक्रम कुमार वर्णवाल	संयुक्त सचिव (ग्रामीण, जालना तथा नांदेड मण्डल)
8)	गणेश जी. दुर्गम	कोषाध्यक्ष
9)	श्रीमती एम.एच.वाजपे	महिला प्रतिनिधि

यह संगठन के सफल प्रयासों से संभाव हुआ है तथा सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी, अधीक्षक तथा प्रशासन के प्रति आभार प्रकट करते है | भविष्य में यह संगठन सभी सदस्यों के हितो की रक्षा हेतू प्रबंधन के साथ मिलकर कार्य करेगा |

संगठन द्वारा किए गए कार्य : 1) संगठन द्वारा कार्यालय के स्टाफ के वाहनोपर कार्यलय के नाम के लोगो सहित स्टीकर लगाए गए |
2) कोविड - 19 की महामारी से संरक्षण के लिए टीकाकरण अभियान में प्रशासन अनुभाग को सहयोग प्रदान किया गया |

भविष्य में संगठन द्वारा वृक्षारोपण, स्वछता अभियान, टीकाकरण कार्यक्रम में सहयोग करना इत्यादी कार्य करने का मानस बनाया है |

गणतंत्र दिवस समारोह 2021

श्री अमोल केत, अपर आयुक्त, गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए |

श्री अमोल केत, अपर आयुक्त, गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए |

अधीक्षक संगठन की नई कार्यकारिणी

बाए से दाएं सर्वश्री चन्द्रमणि कुमार, प्रशांत देशपांडे, अतुल पिल्लेवार, एस.एन. शेख, अधीक्षक, रविन्द्र गरकल, सहायक आयुक्त (निर्वाचन अधिकारी), एस.ए. आरिफी प्रशासनिक अधिकारी, मु. (निर्वाचन अधिकारी), गोपाल मॉझी, विजय गिराम, अधीक्षक.

आवरण पृष्ठ संकल्पना

मुख्य पृष्ठ : मुख्य पृष्ठ के छायाचित्र के केंद्र में ऐतिहासिक घृष्णेश्वर मंदिर ज्योतिर्लिंग, ऐतिहासिक देवगिरि किला, एलोरा की गुफाए, पनचक्की, प्राणी संग्रहालय एवं क्रांति चौक उड़ानपुल का विहंगम दृश्य|

अंतिम पृष्ठ : श्री देवेन्द्र पाटिल, अधीक्षक द्वारा संध्याबेला पर लिया गया कार्यालय भवन का मनोहारी चित्र|

संविधान शिल्प उद्घाटन समारोह

शिल्प के दाएँ से सर्वश्री एच.आर.भीमाशंकर, प्रधान मुख्य आयुक्त, नागपुर प्रक्षेत्र, सुनील देशमुख, संयुक्त आयुक्त, अमोल केत, अपर आयुक्त, धीरजकुमार कांबले, उपआयुक्त, एस.ए.आरिफी, प्रशासनिक अधिकारी(मु), शिल्प के बाएँ से सत्यप्रेम मकसरे, अधीक्षक, अनिल गायकवाड, अधीक्षक, ए.जी.ढोबले, अधीक्षक, प्रवीण मुंडे, अधीक्षक, धम्मरत्न शेंडे, निरीक्षक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
28 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक

श्री धीरजकुमार कांबले, उपआयुक्त
श्री प्रशांत देशपांडे, अधीक्षक को पुरस्कार प्रदान करते हुए |

श्री धीरजकुमार कांबले, उपआयुक्त
श्री कुमार गौरव, निरीक्षक को पुरस्कार प्रदान करते हुए|

श्री.एच.आर.भीमाशंकर प्रधान मुख्य आयुक्त, नागपुर प्रक्षेत्र माल एवं सेवाकर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, औरंगाबाद में पुनर्निर्मित जिम का उद्घघाटन करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस 2020

श्री के.वी.एस.सिंह, आयुक्त, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए |

श्री के.वी.एस.सिंह, आयुक्त, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए |

अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क
INDIRECT TAXES AND CUSTOMS
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
देशसेवार्थ करसंचय

1 राष्ट्र
कर
जी.एस.टी.
बाजार
माल एवं सेवा कर